بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक 6-7

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

16-23 शाबान 1447 हिज्री कमरी, 05-12 तबलीग़ 1405 हिज्री शम्सी, 05-12 फ़रवरी 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ ۙ وَلَوۡ کَرِہَ الۡمُشۡرِکُوۡنَ ﴿۳۳﴾ (سورۃالتوبہ:33)

अनुवाद : वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा, ताकि वह उसे समस्त धर्मों पर प्रबल कर दे, चाहे मुशरिक कितना ही अप्रसन्न क्यों न हों।

ईसा अलैहिस्सलाम मरियम के पुत्र पृथ्वी पर अवतरित होंगे, वे विवाह करेंगे और उनकी सन्तान होगी

عَنۡ عبد اللہ بن عَمۡرو قال: قال رَسُولُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ: یَنۡزِلُ عِیسَی بنُ مَرۡیَمَ إِلَی الۡأَرۡضِ فَیَتَزَوَّجُ وَیُولَدُ لَہُ وَیَمۡکُثُ خَمۡسًا وَأَرۡبَعِینَ سَنَۃً ثُمَّ یَمُوتُ فَیُدۡفَنُ مَعِی فِی قَبۡرِی فأقوم أنا وَعِیسَی بن مَرۡیَمَ فِی قَبۡرٍ وَاحِدٍ بَیۡنَ أَبِی بَکۡرٍ وَعُمَرَ

(मिश्कातुल मसाबिह, ग्रन्थ: उपद्रव-वर्णन, अध्याय: ईसा अलैहिस्सलाम का अवतरण, तृतीय खण्ड)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ईसा पुत्र मरियम अलैहिस्सलाम पृथ्वी पर अवतरित होंगे। वे विवाह करेंगे और उनकी सन्तान होगी। वे पैंतालीस वर्ष तक जीवित रहेंगे, तत्पश्चात उनका देहांत हो जाएगा। उन्हें मेरी समाधि के समीप ही मेरे पास दफन किया जाएगा। मैं और ईसा पुत्र मरियम, अबूबक्र और उमर के मध्य से एक ही कब्र से उठाए जाएंगे।

मुस्लेह मौऊद के विषय में भविष्यवाणी

हज़रत मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

ब-इल्हामिल्ला ही तआला (بِاِلۡہَامِ اللّٰہِ تعالیٰ) व ऐलामेही अज़्ज़ा-व-जल (وَاِعۡلَامِہٖ عَزَّوَجَلَّ) ख़ुदा-ए-रहीम व क़रीम बुज़ुर्ग व बरतर ने जो हर चीज़ पर कादिर है जल्ला शानोहू व अज्ज़ा इस्मोहु (جَلَّ شَانُہٗ وَعَزَّ اسۡمُہٗ) मुझ को अपने इल्हाम से सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे एक रहमत का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा अतः मैंने तेरी ज़रूरियात को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से बापाया ए कुबलियत जगह दी और तेरे सफ़र को जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है, तेरे लिए मुबारक कर दिया। सो कुदरत और रहमत और कुरबत का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान का निशान तुझे अता होता है और फ़तह और ज़फ़्फ़र की कलीद तुझे मिलती है। ऐ मुज़फ्फ़र तुझ पर सलाम ख़ुदा ने यह कहा ता वे जो जिन्दगी के खवाहां हैं मौत के पंजा से निजात पावें और जो कबरों में दबे पड़े हैं बाहर आवें और ता दीन-ए-इसलाम का शरफ़ और कलामुल्लाह का मरतबा लोगों पर ज़ाहिर हो और ता हक अपनी समस्त बरकता के साथ आ जाए और बातिल अपनी समस्त नहूँसतों के साथ भाग जाए।

और ता लोग समझे कि मैं कादिर हूँ जो चाहता हूँ करता हूँ और ता वे यकीन लाएँ कि मैं तेरे साथ हूँ और ता उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर इमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के दीन और उसकी किताब और उसके पाक रसूल मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इंकार और तकज़ीब की निगाह से देखते हैं एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह ज़ाहिर हो जाएं ।

सो तुझे बशारत हो कि एक वजीह और पाक लड़का तुझे दिया जाऐगा एक ज़क्की गुलाम (लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरी ही तुख्म से तेरी ही ज़ुर्रियत व नसल होगा। ख़ूबसूरत पाक लड़का तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन-मवाईल और बशीर भी है उसको मुक़द्दस रूह दी गई है और वह रिजस से पाक है वह नूरुल्लाह है। मुबारक वह जो आसमान से आता है उसके साथ फज़्ल है जो उसके आने के साथ आऐगा वह साहिबे शकूह और अज़मत और दोलत होगा।

वह दुनिया में आऐगा और अपने मसीही नफ्स और रूहुल हक की बरकत से बहुतों को बिमारियों से साफ करेगा वह कलामतुल्लाह है क्योंकि ख़ुदा की रहमत व ग़य्यूरी ने उसे अपने कलेमा तमजीद से भेजा है। वह सखत ज़हीनो फ़हीम होगा और दिल का हलीम और उलूमे-ए-ज़ाहिरी वा बातनी से पुर किया जऐगा। और वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके मायने समझ में नहीं आए) दो शंम्बा है मुबारक दो शंम्बा फ़रज़न्द दिलबन्द गिरामी अरजुमंद

(مَظۡہَرُ الۡاَوَّلِ وَالۡاٰخِرِ۔ مَظۡہَرُ الۡحَقِّ وَالۡعَلَاءِ/کَاَنَّ اللّٰہَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ)

मज़हरुल अव्वलि वल आखिरि मज़हरुल हक़्क़ वल अलाए का अन्नल्लाहा नज़ा-ला मिनस्समाए। जिसका नज़ूल बहुत मुबारक और जलाले इलाही के ज़हूर का मोजिब होगा। नूर आता है नूर जिसको ख़ुदा ने अपनी रज़ामन्दी के इतर से मम्सूह किया। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे और ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा वह जल्द-जल्द बढ़ेगा और असीरों की रुस्तगारी का मोजिब होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत पाएगा। और क़ौमें उससे बरकत पाएंगी तब अपने नफ्सी-नुक़्ता आसमान की तरफ उठाया जाऐगा। "वा काना अमरन मकज़िय्या" (وَکَانَ اَمۡرًا مَّقۡضِیًّا)

(मज्मुआ इश्तेहारात भाग प्रथम पृष्ठ 100 विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ज़मीन के किनारों तक शोहरत प्राप्त करेगा ...और ...कौमे उससे बरकत पाएँगी।

(संपादकीय)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम, जिनके हृदय में ख़ुदा तआला ने युवावस्था के आरम्भ से ही इस्लाम की सेवा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रति प्रेम का भाव स्थापित कर दिया था उनके युग में अन्य धर्मों के विरोधियों की ओर से इस्लाम पर चारों दिशाओं से आक्रमण हो रहे थे। मुसलमान उनका उत्तर देने में असमर्थ थे, बल्कि शिक्षित मुसलमान तो अँग्रेज़ी शासन से प्रभावित होकर स्वयं इस्लाम को ही त्यागने लगे थे। ऐसे अत्यन्त संकटपूर्ण और निराशाजनक दिनों में आपने ख़ुदा तआला के आदेश से "बराहीने अहमदिया" नामक ग्रन्थ चार भागों में लिखा, जो 1882 ई. से 1884 ई. के मध्य पूर्ण हुआ। 1882 ई. में आप पर नियुक्ति का प्रथम ख़ुदा तआला का संदेश अवतरित हुआ और ख़ुदा तआला ने आपको संबोधित करते हुए कहा:

قُلْ اِنِّیْ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ

अर्थात् कह दे, निःसन्देह मैं ख़ुदा तआला की ओर से नियुक्त किया गया हूँ और मैं ही सर्वप्रथम विश्वास करने वाला हूँ।

(बराहीने अहमदिया भाग चतुर्थ, पृष्ठ 502–503, हवाला तज़किरा पृष्ठ 35, मुद्रित क़ादियान)

नियुक्ति के इस ख़ुदा तआला का संदेश के पश्चात् आप पर चमत्कारों और दिव्य चिन्हों का क्रम आरम्भ हो गया। आप ख़ुदा तआला से प्रार्थना करने लगे कि आपको इस्लाम की विजय के मार्ग दिखाए जाएँ। तब आप पर यह पवित्र क़ुरआन की आयत ख़ुदा तआला का संदेश के रूप में उतरी:

هُوَ الَّذِیْ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰی وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَی الدِّیْنِ کُلِّهٖ
(الصف:10)

आपने फ़रमाया:

"मुझ पर इस क़ुरआनी आयत का ख़ुदा तआला का संदेश उतरा था, और वह यह है वही ख़ुदा तआला है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि वह अपने धर्म को सब धर्मों पर विजयी करे। मुझे इस ख़ुदा तआला का संदेश का यह अर्थ समझाया गया है कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से इसलिए भेजा गया हूँ कि मेरे हाथ से ख़ुदा तआला इस्लाम को सब धर्मों पर विजयी करेगा। और यहाँ स्मरण रहे कि यह पवित्र क़ुरआन में एक अत्यन्त महान भविष्यवाणी है, जिसके विषय में विद्वानों और अन्वेषकों की सर्वसम्मति है कि यह मसीह मौऊद के हाथों पूर्ण होगी।"

(तिर्याकुल क़ुलूब, पृष्ठ 47)

मसीह और महदी होने के दावे के पश्चात् विभिन्न धर्मों के नेताओं ने आपका विरोध तीव्र कर दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने समस्त संसार को दिव्य चिन्ह देखने की चुनौती दे दी। इस पर क़ादियान के हिन्दुओं ने निवेदन किया कि पड़ोसी होने के कारण वे चिन्ह देखने के अधिक अधिकारी हैं। तब हज़रत को ख़ुदा तआला का संदेश हुआ:

"तुम्हारी उक्दा कुशाही होशियारपुर में होगा।"

(सीरतुल महदी, भाग प्रथम, वर्णन संख्या 88)

इस पर हज़रत होशियारपुर पधारे और चालीस दिनों तक ख़ुदा तआला की उपस्थिति में अत्यन्त विनय और प्रार्थना में लगे रहे। तब आपको एक ऐसे पुत्र की शुभसूचना दी गई, जिसके माध्यम से इस्लाम समस्त विश्व में फैलेगा, जो ज़मीन के किनारों तक शोहरत प्राप्त करेगा और कौमे उससे बरकत पाएँगी।

यह श्रेष्ठ पुत्र भविष्यवाणी के तीन वर्ष पश्चात् 12 जनवरी 1889 को जन्मा और 14 मार्च 1914 को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वितीय ख़लीफ़ा के रूप में ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुआ। "मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु" की भविष्यवाणी में आपके विषय में जो गुण और भविष्य कथन वर्णित किए गए थे जिनका उल्लेख इसी अंक में अन्य स्थान पर हो चुका है वे सब आपकी पवित्र हस्ती में पूर्ण हुए। उनमें आपको विजय और सफलता की कुंजी बताया गया था, यह भी कहा गया था कि आपके माध्यम से आध्यात्मिक रूप से मृत लोग जीवित होंगे, इस्लाम का गौरव और ख़ुदा तआला के वचन का पद प्रकट होगा। आप मसीही स्वभाव वाले होंगे, तीक्ष्ण बुद्धि और गहन समझ रखने वाले, कोमल हृदय के धैर्यवान होंगे। आपको बाह्य और आन्तरिक विद्याओं से परिपूर्ण किया जाएगा। आप ख़ुदा तआला का प्रकाश होंगे। आप पर ख़ुदा तआला का वाणी अवतरित होगी। ख़ुदा तआला की छाया आपके सिर पर होगी। आप ज़मीन के किनारों तक शोहरत प्राप्त करेंगे और कौमे आपसे बरकत पाएँगी।

ख़ुदा तआला साक्षी है कि ये सब चिन्ह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के जीवनकाल में पूर्ण हो चुके हैं और प्रलय तक पूर्ण होते रहेंगे।

आपने ख़ुदा तआला के आदेश से 1944 में मुस्लेह मौऊद होने का दावा किया, शपथपूर्वक घोषणा की, और आधी शताब्दी से अधिक समय तक ख़िलाफ़त के पद पर आसीन रहे। आप ऐसे समय ख़लीफ़ा बने जब अपने और पराये सब विरोधी थे तथा युद्धों के कारण विश्व की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो चुकी थी।

ऐसी परिस्थितियों में आपने इस्लाम के प्रचार का ध्वज अपने पवित्र हाथों में लिया, और देखते ही देखते भारत से निकलकर एशिया के अन्य देशों, यूरोप, अफ़्रीका तथा अन्य महाद्वीपों में इस्लाम का ध्वज स्थापित कर दिया। इस अभियान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा भी उसी प्रकार सम्मिलित थे जैसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा सम्मिलित थे। लंदन में इस्लामी ध्वज स्थापित करने हेतु हज़रत चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा गया। मॉरीशस में हज़रत सूफ़ी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में इस्लामी ध्वज था। अमरीका में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु पधारे। अफ़्रीका का भाग्य हज़रत मौलवी अब्दुर्रहीम साहिब नय्यर रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से जागा। सुदूर पूर्व में हज़रत मौलवी रहमत अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु निद्रित लोगों को जगाने के लिए गए, जबकि दमिश्क और फ़िलस्तीन का भाग्य जगाने के लिए हज़रत सईद ज़मीनुल आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु पधारे।

फिर 1934 से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की पवित्र योजना "तहरीक-ए-जदीद" ने इस्लाम की विजय की आध्यात्मिक तलवार अपने हाथ में ले ली। अब विश्व के सैकड़ों देशों में जीवन समर्पित करने वाले व्यक्तियों का समूह इस्लाम का शान्तिदायक संदेश फैलाने के लिए पहुँच चुका है। धनी हो या निर्धन प्रत्येक अहमदी एक ओर जीवन समर्पण के संघर्ष में सम्मिलित हुआ और दूसरी ओर धन त्याग के संघर्ष में उतर आया। आज स्थिति यह है कि जहाँ "तहरीक-ए-जदीद" विश्व के देशों में इस्लाम के प्रचार के कार्य में संलग्न है, वहीं "वक़्फ़-ए-जदीद" के माध्यम से संसार भर के ग्रामों में प्रचार और नैतिक प्रशिक्षण का जाल बिछा दिया गया है। अहमदियत के माध्यम से इस्लाम का यह संदेश विश्व के 216 देशों में फैल चुका है।

क्या यह सब कार्य ख़ुदा तआला की सहायता और समर्थन के बिना संभव है? और क्या यह महान सफलता इस बात का स्पष्ट प्रमाण नहीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में जो यह ख़ुदा तआला का संदेश हुआ था

"ज़मीन के किनारों तक शोहरत प्राप्त करेगा और कौमे उससे बरकत पाएँगी।"

वह संदेश उसी सत्य ख़ुदा तआला की ओर से था जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा, और जिनकी भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अवतरित हुए, और जिन्होंने मुस्लेह मौऊद के आगमन का ख़ुदा तआला का समाचार दिया, तथा ख़ुदा तआला ने उस समाचार के प्रत्येक अक्षर को सत्य सिद्ध कर दिखाया। अतः समस्त स्तुति ख़ुदा तआला के लिए है।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक ऐसे प्रेमी और दीवाने थे जिन्होंने एक ही सत्ता से प्रेम किया, और फिर वह पाया जो संसार में किसी और को कभी प्राप्त नहीं हुआ।

आपको ख़ुदा तआला से इतनी गहरी मुहब्बत थी कि साधारण लोग भी कहा करते थे

“अशिक़ा मुहम्मदुन अला रब्बिहि”

अर्थात् मुहम्मद अपने पालनहार पर आशिक हो गए हैं। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

एक ओर आपके हृदय में ख़ुदा तआला की मुहब्बत की वेदना थी, और दूसरी ओर ख़ुदा तआला की सृष्टि के लिए करुणा और उन्हें विनाश से बचाने की तीव्र इच्छा थी।

खुदा तआला से सच्चा प्रेम कैसे प्राप्त किया जाए यह मार्ग भी रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श जीवन से ही सीखना होगा।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने पालनहार की मुहब्बत पाने की चाह रखते हुए यह दुआ किया करते थे

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ حُبَّكَ، وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ، وَالْعَمَلَ الَّذِي يُبَلِّغُنِي حُبَّكَ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي وَأَهْلِي وَمِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ۔

हे अल्लाह! मैं तुझसे तेरी मुहब्बत माँगता हूँ, और उसकी मुहब्बत जो तुझसे प्रेम करता है, और ऐसे कर्म की शक्ति माँगता हूँ जो मुझे तेरी मुहब्बत तक पहुँचा दे।

हे अल्लाह! तू अपनी मुहब्बत को मेरी जान, मेरे परिवार और ठंडे पानी से भी अधिक प्रिय बना दे।

यह वह दुआ है जो आज हर उस व्यक्ति को करनी चाहिए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम का दावा करता है, और जो चाहता है कि वह भी ख़ुदा तआला से प्रेम व्यक्त करे, उसका प्रिय बने और उस पर उसकी कृपा बरसे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का संपूर्ण जीवन खुदाई प्रेम में डूबा हुआ था। उसी प्रेम के दृश्य देखकर मक्का के लोग कहा करते थे

“इन्ना मुहम्मदन अशिक़ा रब्बहू”

अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने पालनहार पर आशिक हो गए हैं।

“मेरे हृदय का फल अल्लाह का स्मरण है और मेरी लगन मेरे पालनहार में है।”

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उस सच्चे मनुष्य का मुख देखा था, जिसके अल्लाह का आशिक होने की गवाही कुरैश के विरोधियों के मुख से भी अनायास निकल जाती थी। वे आपकी दैनिक प्रार्थनाएँ, प्रेम से भरे सजदे, पूर्ण आज्ञापालन की स्थिति, उच्च प्रेम और समर्पण के प्रकाशमान चिन्ह, तथा उस पवित्र मुख पर उतरते ख़ुदा तआला के प्रकाश को देखते थे और कहते थे

“अशिक़ा मुहम्मदुन अला रब्बिहि”

कि मुहम्मद अपने पालनहार पर आशिक हो गए हैं। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

यह था रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का आदर्श और ख़ुदा तआला की मुहब्बत का नमूना। इसी आदर्श के प्रभाव से सहाबा में एक बड़ा परिवर्तन उत्पन्न हुआ और उन्होंने वह ऊँचा स्थान पाया जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यही वह पूर्ण शिक्षा है जिसे आपके सच्चे सेवक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अपनाया।

आज जब हम यह दावा करते हैं कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे अनुयायी हैं, और हमने उनके सच्चे सेवक के हाथ पर बैअत करके यह नवीनीकरण किया है कि हम अपने जीवन को ख़ुदा तआला के आदेशों के अनुसार ढालने का प्रयास करेंगे, तो हमें ध्यान देना चाहिए कि हम हर कार्य केवल ख़ुदा तआला के लिए करें और उसकी मुहब्बत में आगे बढ़ने का प्रयत्न करें। तभी हम उसके फ़ज़्लों के अधिकारी बन सकेंगे, नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत होने का अधिकार निभा सकेंगे, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक अदा कर सकेंगे।

पाकिस्तान के अहमदियों और संसार के पीड़ित लोगों के लिए प्रार्थना की प्रेरणा

श्रीमान जलालुद्दीन नय्यर साहब (पूर्व अध्यक्ष, सदर अंजुमन अहमदिया कादियान तथा सदर मजलिस तहरीक-ए-जदीद)

और श्रीमान मीर हबीब अहमद साहब के देहांत पर उनका उल्लेख तथा नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ुदा से मुहब्बत

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 दिसम्बर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के संदर्भ में कुछ बातें प्रस्तुत की थीं। आज ख़ुदा तआला की मुहब्बत के संदर्भ में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के कुछ पहलुओं का वर्णन करूँगा। संभव है कि कुछ बातें संक्षेप में पहले भी कही जा चुकी हों, किन्तु यहाँ कुछ स्थानों पर उनका विस्तार भी उपस्थित है।

हम देखते हैं कि सीरत के इस पक्ष से ख़ुदा तआला की हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत का भी प्रकट होना होता है। केवल हुज़ूर

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ुदा तआला से मुहब्बत ही नहीं, अपितु ख़ुदा तआला की भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत है। फिर ख़ुदा तआला ने इस प्रकटिकरण के उपरान्त जो उसकी मुहब्बत का हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मार्गदर्शन किया, और फिर किस प्रकार इस मुहब्बत में और अधिक बढ़कर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत का प्रशिक्षण किया तथा उम्मत का मार्गदर्शन भी किया।

ख़ुदा तआला ने जो शिक्षा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अवतरित की, उसे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किस प्रकार उम्मत तक पहुँचाया ताकि उनका मार्गदर्शन हो इस हेतु हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हृदय में एक पीड़ा थी; बल्कि यही पीड़ा थी जिसके कारण ख़ुदा तआला ने ही हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मार्गदर्शन किया कि आपको उम्मत का भी मार्गदर्शन करना है। या यूँ कहा जाए कि एक ओर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हृदय में ख़ुदा तआला की मुहब्बत की पीड़ा थी और दूसरी ओर ख़ुदा तआला की सृष्टि की मुहब्बत की पीड़ा तथा उन्हें विनाश से बचाने की अभिलाषा थी।

ख़ुदा तआला कुरआन-ए-करीम में सूरह अद्-दुहा में फ़रमाता है:

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى۔ (الضحىٰ:8)

अर्थात् जब उसने तुझे अपनी क़ौम की चिंता में व्याकुल देखा तो उनकी सुधार का सही उपाय तुझे बता दिया। और ख़ुदा तआला की मुहब्बत के दृष्टिकोण से इस आयत का यह अर्थ होगा कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है हमने तुझे अपनी मुहब्बत में अत्यन्त आहत देखा, तब अंततः तुझे वह मार्ग बता दिया जिस पर चलकर तू हमारे पास पहुँच गया।

तफ़्सीर कबीर (इमाम राज़ी) में सूरह अद्-दुहा की आयत **وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى** की व्याख्या में लिखा है कि "ضلال" के एक अर्थ मुहब्बत भी होते हैं, जैसा कि ख़ुदा तआला के इस कथन **اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ** में "ضلال" का अर्थ अपनी मुहब्बत है। अतः भाव यह होगा कि "तू प्रेमी है। अतः मैंने तेरा मार्गदर्शन उन पथों की ओर किया जिनके द्वारा तू अपने प्रियतम की सेवा करके निकटता की मंज़िलें तय कर सकता है।"

(मफ़ातीहुल ग़ैब (तफ़्सीर कबीर) जिल्द 16, जुज़्ज़ 31, पृष्ठ 197, तफ़्सीर सूरह अद्-दुहा, ज़ेर आयत 7, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत 2004)

इससे ख़ुदा तआला ने प्रमाणित कर दिया कि तू ख़ुदा तआला की मुहब्बत में सराबोर है।

इस मुहब्बत का प्रकटिकरण हम विभिन्न रिवायतों में देखते हैं वह मुहब्बत जो ख़ुदा तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से की और जो मुहब्बत हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा तआला से थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति कुरआन-ए-करीम की भाषण-शैली को भलीभाँति जानता है, उससे यह बात छिपी नहीं कि कभी-कभी वह करीम व रहीम ख़ुदा तआला अपने विशिष्ट बन्दों के लिए ऐसे शब्द प्रयोग कर देता है जो ऊपर से देखने में अनुपयुक्त प्रतीत होते हैं, किन्तु अर्थ की दृष्टि से अत्यन्त प्रशंसनीय और सराहना के शब्द होते हैं।

यदि इस शब्द को सामान्य प्रयोग में देखें तो प्रतीत होता है कि यह उपयुक्त शब्द नहीं, क्योंकि "ضال" का अर्थ गुमराह होता है। किन्तु नहीं! जब ख़ुदा तआला अपने विशिष्ट बन्दों के लिए विशिष्ट अवसर पर इसका प्रयोग करता है तो इसके अर्थ बदल जाते हैं, जैसा कि ख़ुदा तआला ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विषय में फ़रमाया:

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى (الضحىٰ:8)

अब स्पष्ट है कि "ضال" के प्रसिद्ध और प्रचलित अर्थ जो भाषाविदों की जिह्वा पर हैं "गुमराह" के हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि इस आधार पर आयत का अर्थ किया जाए कि ख़ुदा तआला ने ऐ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! तुझे गुमराह पाया और हिदायत दी तो यह अर्थ सर्वथा असत्य है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कभी गुमराह नहीं हुए। जो व्यक्ति मुसलमान होकर यह विश्वास रखे कि कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने जीवन में गुमराही का कर्म किया था, वह काफ़िर है, अधर्मी है और दण्ड का पात्र है।

अपितु इस स्थान पर वही अर्थ लेने चाहिए जो आयत के प्रसंग से मेल खाते हैं। और वे यह हैं कि ख़ुदा तआला ने पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संबंध में फ़रमाया:

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى۔ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى۔ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى۔ (الضحىٰ:7-9)

अर्थात् ख़ुदा तआला ने तुझे अनाथ और असहाय पाया, फिर अपने समीप स्थान दिया। और तुझे "ضال" अर्थात् ख़ुदा तआला के मुख-दर्शन का प्रेमी पाया ख़ुदा तआला का आशिक पाया अतः ख़ुदा तआला ने तुझे अपनी ओर खींच लिया। और तुझे दरवेश पाया, फिर तुझे समृद्ध कर दिया।

(उद्धारित आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 5, पृष्ठ 170–171)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी पवित्र अंतरात्मा, हृदय-प्रसार, पवित्रता, लज्जा, सत्य, निर्मलता, भरोसा, निष्ठा और प्रेम-ए-इलाही के सभी अनिवार्य गुणों में सभी नबियों से बढ़कर, सबसे श्रेष्ठ, उच्च, पूर्ण, महान और निर्मल थे इसलिए ख़ुदा तआला ने उन्हें विशेष पूर्णताओं की सुगन्ध से सबसे अधिक सुवासित किया। और वह वक्षस्थल और हृदय जो समस्त पूर्वजों और पश्चातजों के हृदयों से अधिक विस्तृत, अधिक पवित्र, अधिक निष्पाप और अधिक प्रकाशमान था, वही इस योग्य ठहरा कि उस पर ऐसी वह्य अवतरित हो जो समस्त पूर्ववर्ती और पश्चातवर्ती वह्यों से अधिक प्रबल और अधिक पूर्ण हो।"

अर्थात् अत्यन्त दृढ़, पूर्ण, उच्च और परिपूर्ण और ख़ुदा तआला के गुणों को प्रदर्शित करने के लिए एक अत्यन्त निर्मल, विस्तृत और विशाल दर्पण हो। इस दर्पण में हम ख़ुदा तआला के गुण भी देखते हैं और ख़ुदा तआला की सत्ता का प्रत्येक पक्ष हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के व्यक्तित्व में तथा आपकी शिक्षा में दृष्टिगोचर होता है।

फ़रमाया: "यही कारण है कि कुरआन शरीफ़ ऐसे उच्चतम गुणों को धारण किए हुए है कि उसकी तीव्र किरणों और प्रखर प्रकाश के सामने समस्त पूर्ववर्ती ग्रंथों की चमक लुप्तप्राय हो जाती है।" अर्थात् पूर्ववर्ती सभी ग्रंथ और उनके वचन उसके सामने कोई महत्त्व नहीं रखते। "कोई बुद्धि ऐसी सत्यता निकाल नहीं सकती जो पहले से उसमें अंकित न हो। कोई चिंतन ऐसा तर्क प्रस्तुत नहीं कर सकता जो पहले ही से उसने प्रस्तुत न किया हो। कोई भाषण किसी हृदय पर वैसा प्रबल प्रभाव नहीं डाल सकता जैसा वह लाखों हृदयों पर डालता आया है।" अर्थात् कुरआन करीम।

"वह निःसंदेह ख़ुदा तआला के पूर्ण गुणों का अत्यन्त निर्मल दर्पण है, जिससे वह सब कुछ प्राप्त होता है जो एक साधक को उच्चतम ज्ञान-स्तरों तक पहुँचने के लिए आवश्यक है।"

(उद्धारित सुरमा चश्म आर्या, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 2, पृष्ठ 71–72, हाशिया)

अतः जो शिक्षा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुई, वह भी ऐसी पवित्र थी जो सब शिक्षाओं से उच्च थी। सभी शिक्षाओं और सभी ग्रंथों से बढ़कर। कुरआन करीम की शिक्षा पूर्ण और परिपूर्ण है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अस्तित्व भी उसी शिक्षा का धारक है अर्थात् वह भी पूर्ण और परिपूर्ण है।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह सिद्ध किया कि जो ग्रंथ आप पर अवतरित हुआ, वह इसी कारण हुआ कि आपका अस्तित्व समस्त मनुष्यों से श्रेष्ठ है, और आप ही वह पूर्ण मनुष्य हैं जिनके स्तर तक कोई नहीं पहुँच सकता। हाँ, ख़ुदा तआला ने यह अवश्य कहा है कि तुम्हारे लिए उनमें आदर्श है उनका अनुसरण करने का प्रयास करो।

इसी कारण ख़ुदा तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से यह घोषणा भी करवा दी:

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔ (آل عمران:32)

तू कह दे हे लोगो! यदि तुम ख़ुदा से प्रेम रखते हो तो मेरा अनुसरण

करो; तब वह भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे दोष क्षमा कर देगा, और ख़ुदा अत्यन्त क्षमाशील, बार-बार दया करने वाला है।

अतः ख़ुदा तआला से प्रेम प्राप्त करने के उपाय भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श से ही सीखने होंगे।

अल्लाह तआला से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत के जो दृश्य हमें दिखाई देते हैं, हदीसों में ऐसी बहुत-सी रिवायतें मिलती हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने ख़ुदा की मुहब्बत पाने की चाह रखते हुए यह दुआ किया करते थे:

اَللّٰهُمَّ إِنِّی أَسْأَلُكَ حُبَّكَ، وَحُبَّ مَنْ یُحِبُّكَ، وَالْعَمَلَ الَّذِیْ یُبَلِّغُنِی حُبَّكَ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ أَحَبَّ إِلَیَّ مِنْ نَفْسِی وَأَهْلِی وَمِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ۔

(जामे तिरमिज़ी, किताबुद्-दावात, बाब दुआ दाऊद: اللّٰھم انی اسألك حبك وحب من یحبك। हदीस 3490)

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरी मुहब्बत मांगता हूँ, और उस व्यक्ति की मुहब्बत जो तुझसे मुहब्बत करता है, और ऐसे अमल की तौफीक मांगता हूँ जो मुझे तेरी मुहब्बत तक पहुँचा दे। ऐ अल्लाह! तू अपनी मुहब्बत मुझे मेरी जान, मेरे घरवालों और ठंडे पानी से भी ज़्यादा प्यारी बना दे।”

यह वह दुआ है जो आज हर उस व्यक्ति को करनी चाहिए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत का दावा करता है और जो चाहता है कि वह भी अल्लाह तआला से मुहब्बत का इज़हार करे, उसका प्रिय बने और अल्लाह तआला उस पर अपना फ़ज़्ल करे।

इसी तरह एक रिवायत में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ख़तमी अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थे:

“ऐ अल्लाह! मुझे अपनी मुहब्बत दे और उस व्यक्ति की मुहब्बत दे जिसकी मुहब्बत तेरे पास मेरे लिए फ़ायदेमंद हो। ऐ अल्लाह! जो चीज़ें तू मुझे देता है और जो मुझे पसंद हैं, उन्हें अपनी पसंदीदा चीज़ों को हासिल करने के लिए मेरी ताकत का ज़रिया बना दे। और जो प्यारी चीज़ें तू मुझसे अलग कर दे, उन्हें भी मेरे लिए उन चीज़ों को हासिल करने की ताकत का ज़रिया बना दे जिन्हें तू पसंद करता है।”

(जामे तिरमिज़ी, किताबुद्-दावात, बाब दुआ: اللّٰھم ارزقی حبك و حب من ینفعی حبه عندك۔ हदीस 3491)

इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआ की कि जो चीज़ें मुझे पसंद हैं और जो तू देता है, वे भी तेरी पसंद की चीज़ों को पाने की ताकत बन जाएँ। और जिन चीज़ों को मैं प्यारा समझता हूँ, लेकिन तू उन्हें मुझसे दूर कर दे, तो उनके कारण निराशा न हो, बल्कि वे भी तेरी पसंद की चीज़ें हासिल करने का ज़रिया बन जाएँ। अगर अल्लाह तआला कुछ चीज़ें ले ले, तो बंदे को सोचना चाहिए कि शायद वे अल्लाह को पसंद नहीं थीं या उसकी यही मर्ज़ी थी। इसलिए ऐ अल्लाह! जो चीज़ें तुझे पसंद हैं, उन्हें पाने की ताकत दे। यह भी अल्लाह तआला से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत का इज़हार था।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि “इज़ा जा-अ नसरुल्लाहि वल फत्ह” (जब अल्लाह की मदद और फतह आए) के नाज़िल होने के बाद नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कोई नमाज़ ऐसी नहीं पढ़ी जिसमें यह दुआ न की हो:

سُبْحَانَكَ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ

“ऐ हमारे रब! तू पाक है, तेरी हम्द के साथ। ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ कर दे।”

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुत-तफ़सीर, सूरह इज़ा जा-अ नसरुल्लाह बाब, हदीस 4967)

अल्लाह तआला से मुहब्बत का एक वाक़िया हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा इस तरह बयान करती हैं: एक रात मैं रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास सोई हुई थी। रात में मैंने आपको बिस्तर पर न पाया। अंधेरे में टटोलते हुए मेरा हाथ आपके पैरों से लगा। आप सज्दे में थे और दुआ कर रहे थे:

“मैं तेरी रज़ा की पनाह में आता हूँ तेरी नाराज़गी से, और तेरी माफ़ी की पनाह में आता हूँ तेरी सज़ा से। मैं तेरी पूरी तारीफ़ नहीं कर सकता। तू वैसा ही है जैसा तूने ख़ुद अपनी तारीफ़ की है।”

(सहीह मुस्लिम (उर्दू अनुवाद), जिल्द 2, पृष्ठ 240, किताबुस्सलात, बाब मा युकालु फ़िर्रुकूअ वस्सुजूद, हदीस 743, नूर फ़ाउंडेशन रब्वा)

यानि बंदा अल्लाह की पूरी तारीफ़ कर ही नहीं सकता।

एक और जगह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं: एक रात हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बारी मेरे पास थी। मैं सो गई। आप चुपचाप बाहर चले गए। मुझे लगा शायद आप किसी दूसरी पत्नी के पास गए हैं। मैं गैरत में बाहर निकली तो देखा कि आप ज़मीन पर कपड़े की गठरी की तरह सज्दे में पड़े हैं और यह कह रहे हैं:

سَجَدَ لَكَ سَوَادِی وَخَیَالِی وَآمَنَ بِكَ فُؤَادِی رَبِّ هَذِهِ یَدِی، وَمَا جَنَیْتُ عَلَى نَفْسِی، یَا عَظِیْمُ تُرْجَى لِكُلِّ عَظِیْمٍ فَاغْفِرِ الذَّنْبَ الْعَظِیْمَ۔

“ऐ अल्लाह! मेरा शरीर और मेरी जान तेरे लिए सज्दे में हैं, मेरा दिल तुझ पर ईमान लाता है। ऐ मेरे रब! ये मेरे हाथ हैं और जो कुछ मैंने इनके साथ अपनी जान पर ज़ुल्म किया, वह तेरे सामने है। ऐ बहुत महान! जिससे हर बड़ी चीज़ की उम्मीद की जाती है, तू बड़े गुनाहों को माफ़ कर दे।”

हालाँकि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सिवाय नेकियों के कुछ दिखाई नहीं देता, फिर भी आप अपनी नर्मी और विनम्रता में यह दुआ करते थे।

फिर आपने सर उठाया और मुझे देख लिया। पूछा: “तुम बाहर क्यों आईं?” मैंने कहा: “मुझे गुमान हुआ था कि आप किसी और पत्नी के पास गए हैं।” आपने फ़रमाया: “कुछ गुमान गुनाह बन जाते हैं। क्या तुम्हें मुझ पर शक हुआ?” और फ़रमाया कि ऐसे गुमानों से बचो और अल्लाह से माफी माँगा करो।

फिर आपने बताया कि जिब्रील अलैहिस्सलाम आए थे और उन्होंने ये शब्द पढ़ने को कहा था, इसलिए तुम भी सज्दे में ये पढ़ा करो। जिसने ये कलिमात पढ़े, वह सज्दे से सिर उठाने से पहले माफ़ कर दिया जाएगा।

(मजमउज़्ज़वायद, किताबुस्सलात, बाब मा यक़ूलु फ़ी रुकूअहि व सुजूदिहि, हदीस 2775, जिल्द 2, पृष्ठ 259, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत 2001)

हाँ! यह शर्त भी साथ है कि वह व्यक्ति पूरी तरह अल्लाह तआला पर ईमान रखने वाला हो, उसका विश्वास पूरा हो और वह अन्य नेक काम करने वाला भी हो। इसलिए हज़रत आयशा रज़ि. से यही फ़रमाया गया, क्योंकि आपको मालूम था कि हज़रत आयशा रज़ि. का स्तर क्या है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि जो बाकी नेक काम नहीं करता, वह सिर्फ इतनी-सी दुआ पढ़ ले तो उसे माफ कर दिया जाएगा।

इसी तरह एक और रिवायत आती है, जो अधिक विस्तार से सहीह मुस्लिम में है। हज़रत आयशा रज़ि. बयान करती हैं कि एक बार उस रात, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे घर थे, आप घर लौटे, अपनी चादर रख दी, जूते उतारे और उन्हें अपने पैरों के पास रख दिया। अपनी ऊपर वाली चादर का एक किनारा बिस्तर पर बिछाया और लेट गए। कुछ देर बाद आपने सोचा कि मैं सो गई हूँ, तो आपने धीरे से अपनी चादर ली, आहिस्ता से जूते पहने, दरवाज़ा खोला और बाहर चले गए। फिर दरवाज़ा धीरे से बंद कर दिया।

मैंने अपनी ओढ़नी और ऊपर वाली चादर ली और आपके पीछे चल पड़ी, यहाँ तक कि आप जन्नतुल बक़ी पहुँचे। आप खड़े हुए और लंबे समय तक खड़े रहे। फिर आपने तीन बार दोनों हाथ उठाए। फिर आप वापस मुड़े और मैं भी मुड़ी। आप तेज चलने लगे, मैं भी तेज चलने लगी। आपने चाल और तेज की तो मैंने भी कर ली। आप और तेज चलने लगे, मैं भी चलने लगी। फिर आप घर आ गए और मैं आपसे पहले अंदर आकर लेट गई।

जब आप अंदर तशरीफ लाए तो फ़रमाया, “ऐ आयशा! तुम्हें क्या हुआ है? तुम्हारी सांस क्यों फूल रही है?” तेज चलने की वजह से सांस फूल रही थी। आपने सुन लिया, महसूस कर लिया कि सांस फूल रही है। वह कहती हैं कि तेज चलने से सांस फूल गई थी। मैंने कहा, “कोई बात नहीं,” और टालने की कोशिश की। आपने फ़रमाया, “तुम ज़रूर मुझे बताओगी, वरना लतीफ़ व ख़बीर ख़ुदा मुझे बता देगा।”

मैंने कहा, “या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरे माँ-बाप

आप पर क़ुर्बान हों।" फिर मैंने सारी बात बता दी कि मेरे दिल में क्या ख़्याल आया था और मैं कैसे पीछे गई थी। आपने फ़रमाया, "अच्छा, तो वह परछाईं तुम थीं, जिसे मैंने आगे देखा था?" मैंने कहा, "जी हाँ।"

आपने मेरे सीने पर हाथ मारा, जो मुझे महसूस हुआ, और फ़रमाया, "क्या तुमने यह समझा था कि अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारा हक़ मारेंगे?" हज़रत आयशा रज़ि. कहती हैं कि लोग जो कुछ छिपाते हैं, अल्लाह उसे जानता है। निस्संदेह अल्लाह तआला तो जानता ही है, वह आप पर ज़ाहिर कर देता। मैं ही बता देती हूँ, जो मेरे दिल में था, वह मैंने बता दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "जब तुमने मुझे देखा, उस समय जिब्रील मेरे पास आए थे और उन्होंने मुझे बुलाया था। जब तुमने देखा कि मैं बाहर गया हूँ, तो वह इसलिए था कि उन्होंने मुझे बुलाया था। चूँकि उन्होंने तुमसे यह बात छिपाई थी, इसलिए मैंने उनकी बात मान ली और इसे तुमसे छिपाए रखा। इसी वजह से मैंने तुम्हें नहीं बताया और उनके साथ चला गया। मुझे लगा कि तुम सो चुकी हो और मैंने पसंद नहीं किया कि तुम्हें जगाऊँ। मुझे अंदेशा था कि तुम अकेलापन महसूस करोगी।"

जिब्रील ने रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि आपका रब आपको हुक्म देता है कि आप अहले बक़ी के पास जाएँ और उनके लिए माफी की दुआ करें। हज़रत आयशा रज़ि. कहती हैं कि मैंने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! क्या मैं भी इस सवाब में शामिल हो सकती हूँ? मैं उनके लिए कैसे दुआ करूँ?"

आपने फ़रमाया, "तुम कहो: मोमिनों और मुसलमानों में से इस घर वालों पर सलाम हो। अल्लाह तआला हम में से पहले जाने वालों और बाद में जाने वालों पर रहम करे। और अगर अल्लाह ने चाहा तो हम भी तुमसे मिलने वाले हैं।"

(सहीह मुस्लिम, अनुवाद उर्दू, जिल्द 4, पृष्ठ 138-140, किताबुल जनाइज़, बाब: कब्रिस्तान में दाखिल होते समय क्या कहा जाए और कब्र वालों के लिए दुआ, हदीस 1607, नूर फाउंडेशन रब्वा)

यह दुआ भी आपने सिखाई।

इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अल्लाह तआला से मुहब्बत के बारे में एक रिवायत इस तरह बयान हुई है। अता बयान करते हैं कि मैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. और उबैद बिन उमैर रज़ि., हज़रत आयशा रज़ि. की खिदमत में हाज़िर हुए। हज़रत इब्न उमर रज़ि. ने कहा कि रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो सबसे प्यारी और अजीब बात आपने देखी हो, वह मुझे बताइए।

रावी कहते हैं, यह सुनकर हज़रत आयशा रज़ि. रो पड़ीं। फिर कहा, "आपका हर मामला ही प्यारा और अजीब था।" फिर उन्होंने बयान किया कि एक बार आप मेरी बारी की रात मेरे पास आए। जब आप मेरे साथ लिहाफ में आए और अपने जिस्म को मेरे जिस्म से लगाया, तो आपने फ़रमाया, "ऐ आयशा! अगर तुम इजाज़त दो तो आज की बाकी सारी रात मैं अपने रब की इबादत करूँगा।"

मैंने अर्ज़ किया, "मुझे आपका पास रहना भी प्यारा है और आपकी इच्छा भी प्यारी है। आपकी तमाम इच्छाएँ पूरी हों, यह मुझे सबसे अधिक प्रिय है। अगर आप इबादत करना चाहते हैं, तो कीजिए।"

फिर आप घर में रखी पानी की मशक की तरफ गए, वुज़ू किया, ज्यादा पानी नहीं बहाया। फिर खड़े हुए, क़ुरआन पढ़ने लगे और रोने लगे, यहाँ तक कि मैंने देखा कि आँसू आपके कपड़ों तक पहुँच गए। फिर आपने दाएँ पहलू पर टेक लगाई, दायाँ हाथ अपने गाल के नीचे रखा और फिर रोने लगे, यहाँ तक कि आँसू ज़मीन तक पहुँच गए।

फिर सुबह फज्र की नमाज़ का समय हो गया। हज़रत बिलाल रज़ि. नमाज़ की सूचना देने आए। जब उन्होंने आपको रोते हुए देखा तो अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप रो रहे हैं, जबकि अल्लाह तआला ने आपके आगे-पीछे के सब गुनाह माफ कर दिए हैं।"

आपने फ़रमाया, "क्या मैं शुक्रगुज़ार बंदा न बनूँ?"

(अख़लाकुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व आदाबिहि, पृष्ठ 408-409, ज़िक्र फ़अलिहि फी लैलिएहि व फी फ़िराशिहि..., हदीस 553, दारुल लुअलुअह, काहिरा, 2016)

शुक्रगुज़ारी का एक वाक़या पिछले ख़ुत्बे में भी बयान किया गया था, उसकी तफ्सील में यह भी एक है।

एक और रिवायत में हज़रत आयशा रज़ि. फरमाती हैं कि जब आप बादल या आँधी देखते, तो आपके चेहरे से मालूम होता कि आप चिंतित हैं। मैंने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! लोग जब बादल देखते हैं तो खुश होते हैं कि बारिश होगी, लेकिन मैं देखती हूँ कि जब भी आप बादल देखते हैं तो आपके चेहरे पर चिंता दिखाई देती है।"

आपने फ़रमाया, "ऐ आयशा! मुझे क्या चीज़ इत्मीनान दिला सकती है कि इसमें आँधी का अज़ाब न हो? मैं ग़ैब का इल्म नहीं जानता। कौन सी बात मुझे तसल्ली दे सकती है कि इसमें वही अज़ाब न हो जो पिछली क़ौमों पर आया था। एक क़ौम पर अज़ाब आया था, जब उन्होंने उसे देखा तो कहा, यह बादल है जो हम पर बरसेगा, जैसा कि क़ुरआन शरीफ में भी ज़िक्र है। मुझे क्या मालूम कि इसमें क्या है और क्या नहीं। इसलिए अल्लाह तआला के डर और उसकी मुहब्बत की वजह से, जो मेरे दिल में है, मैं डर जाता हूँ।"

(सहीह बुख़ारी, अनुवाद उर्दू, जिल्द 12, पृष्ठ 68-69, किताबुत तफ़्सीर/ अल-अहक़ाफ़, बाब: फ़लम्मा रअऊहू आरिदन..., हदीस 4829, नज़ारत इशाअत रब्वा)

एक और जगह हज़रत आयशा रज़ि. ने यही रिवायत इस तरह बयान की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब आसमान में बादल देखते तो इधर-उधर, अंदर-बाहर आते-जाते रहते और आपके चेहरे का रंग बदल जाता। और जब बादल बरसना शुरू हो जाता तो आपकी घबराहट दूर हो जाती। सामान्य तौर पर जब बारिश होती थी तो ऐसा ही होता था। हज़रत आयशा रज़ि. ने इस हालत का कारण पूछा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मैं नहीं जानता कि कहीं ये वही बादल न हों, जैसे क़ौम-ए-आद ने सूरह अल-अहक़ाफ़ की आयत के मुताबिक कहा था कि जब उन्होंने बादल अपनी वादियों की तरफ आते देखे तो बोले थे कि यह बादल है जो हम पर बरसेगा, लेकिन वह उन पर अज़ाब लेकर आया था।"

(सहीह बुख़ारी, अनुवाद उर्दू, जिल्द 6, पृष्ठ 29-30, किताब बद्उल-ख़ल्क़, बाब: "वह वही है जिसने हवाएँ अपनी रहमत से पहले भेजीं", हदीस 3206, नज़ारत इशाअत रब्वा)

फिर रिवायत में आता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबी रज़ि. बादल से गिरने वाली पहली बूंद के लिए अपना सिर नंगा कर देते थे। और रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि "हमारे रब्ब अज़्ज़-ओ-जल की तरफ से यह ताज़ा नेमत आई है और बहुत बरकत वाली है।"

(कंज़ुल उम्माल, जिल्द 1, जुज़ 2, पृष्ठ 267, किताबुल अज़्कार/ क़िस्मुल अफ़आल, औक़ातुल इजाबत, हदीस 4936, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, 2004)

जब सामान्य बारिश होती थी तो यह भी आपका तरीका था।

उरवा बिन ज़ुबैर की एक रिवायत है। वह कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस रज़ि. से पूछा कि मुझे वह सबसे बुरा व्यवहार बताइए जो मुश्रिकों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किया था। उन्होंने बताया कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हतीम काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़्बा बिन अबी मुऐत आया और

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलगम इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।

हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

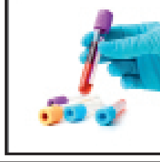

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा

और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा

फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

उसने अपना कपड़ा आपकी गर्दन में डालकर आपका गला ज़ोर से घोंटना शुरू कर दिया। इतने में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आ गए और उन्होंने उक़्बा का कंधा पकड़कर उसे धक्का दिया और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अलग कर दिया। आपने कहा:

"क्या तुम ऐसे व्यक्ति को मारते हो जो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है?"

(सहीह बुख़ारी, अनुवाद उर्दू, जिल्द 7, पृष्ठ 332, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब: मक्का में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा को मुश्रिकों से जो तकलीफ़ें पहुँचीं, हदीस 3856, नज़ारत इशाअत रब्वा)

यह तो केवल अल्लाह की मुहब्बत में डूबा हुआ है, उसकी इबादत कर रहा है, और तुम उसे मारने पर तुले हुए हो।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी ज़िंदगी इश्क़-ए-इलाही में डूबी हुई थी। इन्हीं नज़ारों को देखकर मक्का के लोग कहा करते थे: "इन्ना मुहम्मदन आशिक़ा रब्बहू" यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब पर आशिक हो गए हैं।

(अल-मुनक़िज़ मिनअज़-ज़लाल, इमाम ग़ज़ाली, पृष्ठ 107, "तबत्तुलुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बि हिरा दलिलुल इनक़िताअ इला अल्लाह तआला", दारुल मिन्हाज, 2015)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ऐसी हस्ती के आशिक-ए-ज़ार और दीवाने हुए, फिर वह पाया जो दुनिया में कभी किसी को नहीं मिला। आपको अल्लाह तआला से इतनी मुहब्बत थी कि आम लोग भी कहा करते थे कि 'आशिक़ा मुहम्मदुन अला रब्बिही' यानी मुहम्मद अपने रब पर आशिक हो गए।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 6, एडिशन 2022)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक और जगह फ़रमाते हैं:

"सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उस सच्चे पुरुष का चेहरा देखा था, जिसके अल्लाह का आशिक होने की गवाही क़ुरैश के काफ़िरों के मुँह से भी अपने-आप निकल गई। रोज़ की मुनाजातों और प्यार के सज्दों को देखकर, आज्ञाकारिता में फना होने की हालत, कमाल मुहब्बत और दिलदारी की चेहरे पर साफ निशानियाँ..."

यानी चेहरे पर इश्क की साफ निशानियाँ।

"...और उस पवित्र चेहरे पर नूर-ए-इलाही बरसता हुआ देखकर कहते थे: 'आशिक़ा मुहम्मदुन अला रब्बिही' कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब पर आशिक हो गए हैं। फिर सहाबा ने केवल सच्चाई, मुहब्बत और इख़लास ही नहीं देखा, बल्कि उस प्यार के मुकाबले में, जो हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल से दरिया की तरह उबलता था, अल्लाह तआला के प्यार को भी असाधारण निशानों के रूप में देखा। तब उन्हें यक़ीन हो गया कि अल्लाह है, और उनके दिल पुकार उठे कि वह अल्लाह इस व्यक्ति के साथ है..."

(शहादतुल क़ुरआन, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 6, पृष्ठ 346)

ये बातें बिना अनुभव के संभव नहीं हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपके तरीक़े के बारे में पूछा कि आपका तरीका क्या है। आपने फ़रमाया कि "मआरिफ़त मेरा पूँजी है।" यानी ज़िंदगी के पहलू क्या हैं, किस तरीके पर आपकी ज़िंदगी आधारित है।

आपने फ़रमाया:

"मआरिफ़त मेरी पूँजी है और अक़्ल मेरे दीन की जड़ है। मआरिफ़त मुझे अल्लाह तआला ने दी है, यही मेरी दौलत है। अल्लाह ने मुझे अक़्ल दी है और मैं उसे उसकी मुहब्बत में और उसके बताए उसूलों पर चलकर इस्तेमाल करता हूँ। यही मेरे दीन की बुनियाद है। अल्लाह की मुहब्बत ही मेरी ज़िंदगी की बुनियाद है। अल्लाह की राह में आगे बढ़ने का शौक मेरी सवारी है। मैं उसी पर सवार होकर आगे बढ़ता जाता हूँ। अल्लाह का ज़िक्र मेरा दोस्त और ग़म दूर करने वाला है। अल्लाह पर भरोसा मेरा ख़ज़ाना है। ग़म और दुख मेरे साथी हैं। अगर कोई दुख पहुँचे तो वह भी ज़िंदगी का हिस्सा है। मुझे उनकी परवाह नहीं, क्योंकि अल्लाह मेरे साथ है।"

फिर आपने फ़रमाया कि...

इल्म मेरा हथियार है। अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि इल्म हासिल करो, क्योंकि इल्म हासिल करने से दिमाग को रोशनी मिलती है और अल्लाह तआला की पहचान और बढ़ती है। और मुझे तो अल्लाह तआला ख़ुद इल्म सिखाता है, और जो इल्म अल्लाह तआला की तरफ से मिले, उससे बढ़कर कौन सा हथियार हो सकता है। आपने फ़रमाया कि यही मेरा हथियार है, जिसकी बदौलत मैं तरक़्क़ी कर रहा हूँ। दुनियावी इल्म में भी आपने देखा, जैसे जंगों के हालात में जिनका जिक्र मैं पहले भी पिछले ख़ुत्बों में कर चुका हूँ कि किस तरह अल्लाह तआला ने आपको वह इल्म दिया, जिसकी वजह से आप बेहतरीन योजना और ऊँची दर्जे की योजना बनाया करते थे। इसी तरह आपके पास रूहानी इल्म भी बेहिसाब थे, जिनकी कोई सीमा नहीं, और यह बात सब पर साफ है।

फिर फ़रमाया: सब्र मेरी चादर है। यानी मेरी चादर सब्र है, मेरा लिबास सब्र है। और ख़ुदा की मर्जी पर राजी रहना मेरा माल-ए-गनीमत है। मैं अल्लाह की मर्जी पर राजी रहता हूँ और यही मेरा माल-ए-गनीमत है। फ़क्र मेरा फ़ख्र है। बाहर से अगर फ़क़ीरी या माल की कमी की हालत हो, तो यही मेरा गर्व है। मुझे इस बात पर गर्व है कि अल्लाह तआला ने फ़क्र की हालत के बावजूद मुझे बहुत नवाज़ा है। ज़ुहद मेरा हुनर है। मेरा हुनर सादगी और परहेज़गारी है और मैं इसी को हासिल करने की कोशिश करता हूँ। यक़ीन मेरी ताकत है। अल्लाह तआला पर पूरा यक़ीन है और उसी से मुझे ताकत मिलती है। सच्चाई मेरा सहारा है। मैंने कभी गलत बात नहीं की और सच्चाई ही मेरे लिए सिफारिश का जरिया है। आज्ञापालन मेरे लिए काफी है। मैं अल्लाह तआला के हर हुक्म पर पूरी आज्ञापालन से अमल करने वाला हूँ। जिहाद मेरा स्वभाव है चाहे वह जिस्मानी जिहाद हो, या अल्लाह की राह में रूहानी जिहाद, या अल्लाह की मखलूक के हक अदा करने का जिहाद यही मेरा स्वभाव है। मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है। इन सब बातों के बावजूद मेरी आँखों की असली ठंडक नमाज़ है अल्लाह तआला का क़ुर्ब पाना, उसकी इबादत करना, उसकी मुहब्बत का इज़्हार करना।

एक और हदीस में है, आपने फ़रमाया:

"मेरे दिल का फल अल्लाह का ज़िक्र है और मेरा शौक मेरे रब में है।"

(अश्शिफ़ा बि तआरिफ़ हुक़ूक़िल मुस्तफ़ा, क़ाज़ी अयाज़, पृष्ठ 191, फ़स्ल: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपने रब से डर और उसकी आज्ञापालन, हदीस 347-348, जाइजत दुबई अल-दौलिय्या लिल-क़ुरआन अल-करीम, संयुक्त अरब अमीरात, 2013)

इस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह उस्वा और अल्लाह तआला की मुहब्बत का नमूना था, जिसकी कुछ मिसालें मैंने पेश की हैं। इसी नमूने का असर था कि सहाबा रज़ि. में एक बड़ा बदलाव पैदा हुआ और उन्होंने वह दर्जा पाया, जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है। यही वह पूरी और मुकम्मल तालीम है, जिसे आपके सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अपनाया।

आप एक जगह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने आपको भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी पैरवी की वजह से नवाज़ा है। आपने फ़रमाया:

"मुझे ख़्वाब में दो बार पंजाबी में मिसरे बताए गए। एक तो यही कि 'जे तू मेरा हो रहें, सब जग तेरा हो।' और एक बार मैंने देखा कि एक बड़ा मैदान है, उसमें एक मग्न व्यक्ति मेरी तरफ आ रहा है। जब वह मेरे पास पहुँचा तो उसने यह शेर पढ़ा:

इश्क़ इलाही वस्से मुंह पर वलियाँ एह निशानी"

(तज़किरा, पृष्ठ 439-440, एडिशन 2023)

यानी अल्लाह के प्रेम का असर उनके चेहरे पर होता है, यही औलिया की निशानी है। मतलब यह था कि उसने मुझे देखकर यह कहा, क्योंकि उसे इश्क-ए-इलाही नजर आया था, नूर नजर आया था।

आपने एक जगह यह भी फ़रमाया कि जो कुछ मैंने पाया, वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी में पाया।

(हक़ीक़तुल वह्य, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 22, पृष्ठ 64 से)

तो यह आपका नमूना था और इसी लिए आपने जमाअत क़ायम की थी।

आज हम जो यह दावा करते हैं कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे मानने वाले हैं और हमने आपके सच्चे गुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत करके यह वादा किया है कि अब हम अपनी ज़िंदगी को अल्लाह तआला के हुक्मों के मुताबिक ढालने की कोशिश करेंगे, तो हमें इस तरफ ध्यान देना चाहिए कि हम हर काम केवल अल्लाह तआला के लिए करें और उसकी मुहब्बत में आगे बढ़ने की कोशिश करें। जब हम ऐसा करेंगे, तभी हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बन सकेंगे, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत होने का हक अदा कर सकेंगे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक अदा कर सकेंगे।

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक दे।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी आजकल दुआ करें। दो दिन पहले वहाँ एक मुकदमे में, जो मुबारक सानी साहिब के खिलाफ चल रहा था, सेशन जज ने उन्हें उम्रकैद की सज़ा सुनाई है। इल्ज़ाम यह है कि उन्होंने क़ुरआन करीम रखा हुआ था, उसे पढ़ते भी थे और पढ़ाते भी थे। अब अदालतों की यह हालत है। उनसे क्या सुधार की उम्मीद की जा सकती है। इस फैसले पर गैरों ने भी लिखा है कि यह कैसा मज़ाक जैसा फैसला है। कुछ मौलवियों की तरफ से इस फैसले की बहुत तारीफ हो रही है और जज की प्रशंसा की जा रही है, लेकिन इंसाफ पसंद लोग लिख रहे हैं कि कितना बड़ा "जुर्म" है कि क़ुरआन पढ़ता है, घर में रखता है और बच्चों को पढ़ाता है। यही इन तथाकथित आलिमों और उनके मानने वालों की हालत है। सरकार की व्यवस्था भी कई जगह इन मौलवियों के पीछे चल रही है।

हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला जल्दी अपनी पकड़ का सामान करे। अल्लाह तआला की पकड़, इंशा अल्लाह, जल्द आएगी और उसके निशान भी दिख रहे हैं। लेकिन यह भी ध्यान रहे कि हमारी दुआओं, अमल और इबादत में कमी की वजह से कहीं इसमें देर न हो जाए, जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी इसी डर से बादलों को देखकर दुआ किया करते थे। इसलिए दुआओं पर बहुत ध्यान देने की जरूरत है।

इसी तरह दुनिया के बाकी मज़लूमों के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हर जगह सबको अमन दे और हर फितने और फसाद से बचाए।

नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊँगा। पहला जिक्र मौलाना जलालुद्दीन नैयर साहिब का है। ये क़ादियान में पूर्व सदर, सदर अंजुमन अहमदिया और सदर मजलिस तहरीक-ए-जदीद थे। पिछले दिनों इनका इंतकाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। इनके वालिद श्रीमान एच. हुसैन साहिब विश्व युद्ध के दौरान फौज में क्लर्क थे। उसी दौरान बसरा में 1922 में अहमदियत कबूल की और केरल से निकलने वाले जमाअती रिसाले "सत्य दूतन" के संपादक बने। बाद में क़ादियान आकर बस गए, लेकिन एक साल के अंदर उनका इंतकाल हो गया। उनकी वालिदा ज़ुबैदा सुल्ताना साहिबा ने बाद में चौधरी अब्दुल हक साहिब से निकाह किया, जो दरवेश थे, और उन्होंने नैयर साहिब व उनके भाई-बहनों की परवरिश की।

जलालुद्दीन नैयर साहब की प्रारंभिक शिक्षा कादियान में हुई और 1963 में उन्होंने मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा पास की। इसके बाद उनका नियुक्ति हो गया। पहले उन्होंने अंजुमन में इंस्पेक्टर बैतुलमाल के रूप में लंबे समय तक सेवा की और पूरे हिंदुस्तान की जमाअतों का दौरा करते रहते थे। इस कारण बड़ी मेहनत और प्रेम से उन्होंने जमाअत के लोगों को चंदे के निज़ाम में शामिल किया। इसी वजह से पूरे भारत में जमाअत के सदस्यों के साथ उनका व्यक्तिगत संबंध भी बन गया था। तिरेसठ वर्ष तक मरहूम को जमाअती सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। इस दौरान इंस्पेक्टर बैतुलमाल आमद के बाद ऑडिटर, मुहासिब और फिर लंबे समय तक नाज़िर बैतुलमाल आमद के रूप में सेवा का अवसर मिला। जैसा कि मैंने कहा, सात साल तक वे सदर, सदर अंजुमन अहमदिया कादियान भी रहे। फिर जब तक सेहत ने इजाज़त दी, वे सदर मजलिस तहरीक-ए-जदीद भी रहे। इसी तरह उप-संगठनों में भी उन्हें सेवा करने का अवसर मिला। वे इबादत करने वाले और रोज़ा-नमाज़ के पाबंद थे और ख़िलाफ़त की हर बात पर अमल करने वालों में सबसे आगे रहने वालों में थे। वे खिलाड़ी भी थे और एथलीट भी थे। इस लिहाज़ से भी उन्होंने वहाँ अच्छा संगठन किया।

उनकी शादी कश्मीर के एक परिवार में हुई थी और उनकी पत्नी पहले ही वफ़ात पा चुकी थीं। मरहूम के दो बेटे और एक बेटी हैं, जो जमाअत की सेवा कर रहे हैं। ख़ुदा तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार करे।

दूसरा ज़िक्र श्रीमान मीर हबीब अहमद साहब का है, जो मीर मुश्ताक अहमद साहब के बेटे थे। कुछ दिन पहले 79 वर्ष की उम्र में उनका इंतिक़ाल हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। वे बहुत स्नेही, मिलनसार और ख़िलाफ़त पर जान देने वाले व्यक्ति थे। ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से वे मूसी भी थे। उनके परिवार में अहमदियत का प्रवेश उनके दादा बावो अब्दुर्रहीम साहब के माध्यम से हुआ, जिन्होंने हज़रत मीर क़ासिम अली साहब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, संपादक पत्रिका "फ़ारूक़", के माध्यम से 1903 में बैअत की थी। हज़रत मीर क़ासिम अली साहब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मीर हबीब साहब के पिता मुश्ताक अहमद साहब को गोद लिया था, क्योंकि हज़रत मीर क़ासिम अली साहब की अपनी कोई संतान नहीं थी। मीर हबीब साहब ने गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से एफ.एस.सी., फिर बी.एस.सी., और उसके बाद एम.एस.सी. फ़िज़िक्स की डिग्री हासिल की। फिर वे विदेश भी गए।

उनकी जमाअती सेवाएँ इस प्रकार हैं कि 1970 से 1971 तक तालीमुल इस्लाम कॉलेज में अध्यापक के रूप में पढ़ाने की सेवा शुरू की। उस समय कॉलेज राष्ट्रीयकृत नहीं हुए थे। 1973 से 1976 तक नसरत जहाँ स्कीम के तहत सिएरा लियोन गए, जहाँ फ्रीटाउन में फ़िज़िक्स के शिक्षक के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ पाई। फिर 1976 में वे पाकिस्तान लौट आए। उसी साल फिर नाइजीरिया चले गए और वहाँ 1987 तक सरकारी स्कूल में काम किया। वहीं अफ्रीका में रहते हुए 1987 में ही उन्होंने अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी। वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी के रूप में 1987 में अहमदिया सीनियर सेकेंडरी स्कूल उमाइशा (Umaisha) में प्रिंसिपल के रूप में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमतुल्लाह अलैह ने उनका नियुक्ति किया, जहाँ उन्होंने 1991 तक सेवा की। इसके बाद वे पाकिस्तान लौट आए और यहाँ भी जमाअती सेवा करते रहे। 1992 में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमतुल्लाह अलैह ने एक टेक्निकल इंस्टिट्यूट के निरीक्षण के लिए उन्हें सिएरा लियोन भेजा। उनकी विशेषज्ञ राय की रिपोर्ट पर वहाँ कुछ काम हुए। 1996 में नज़ारत तालीम के तहत उनका नियुक्ति नसरत जहाँ अकैडमी रब्वाह में हुआ और वे फ़िज़िक्स पढ़ाते रहे। वहीं से उनकी रिटायरमेंट हुई। इसी तरह सदर उमूमी के दफ़्तर में भी वालंटियर के रूप में सदर उमूमी की इस्लाही कमेटी में काम करते रहे।

उनकी पत्नी लिखती हैं कि मेरे पति रोज़ा-नमाज़ के पाबंद थे। बहुत नरम स्वभाव के थे और कभी कोई माँग नहीं की। पढ़ने का बहुत शौक था। ज्ञान-प्रेमी इंसान थे। अगर कोई पूछता कि आपके लिए क्या लाएँ, तो कहते मेरे लिए किताबें ले आओ। वे ज्ञान से जुड़ी किताबें पढ़ते थे। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का भी बहुत अध्ययन करते थे। कभी गलत बयान नहीं करते थे। अगर कोई बात बतानी नहीं होती थी तो चुप रहते थे, लेकिन गलत बात नहीं कहते थे। उनकी बेटी ने भी यही गुण बताए हैं। मैंने भी उन्हें देखा है। वे बहुत शरीफ़ इंसान थे, अपने काम से काम रखने वाले और वक़्फ़ को वफ़ादारी के साथ निभाने वाले थे। ख़ुदा तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार करे।

मीर इसहाक साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की नातिन सैय्यदा लुबना के साथ उनकी शादी हुई थी, जो मेजर सईद अहमद साहब की बेटी थीं। और हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मीर नासिर नवाब साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे थे। वे जमाअत में प्रसिद्ध हैं। उनका क़ुरआन करीम का अनुवाद भी जमाअत में प्रचलित है। बहरहाल, ख़ुदा तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार करे।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 16 जनवरी 2026, पृष्ठ 1 से 8)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

''हमारा स्वर्ग हमारा ख़ुदा तआला है। हमारी सर्वोच्च आनंदानुभूतियाँ हमारे ख़ुदा तआला में हैं, क्योंकि हमने उसे देखा और प्रत्येक सुंदरता उसी में पाई। यह संपदा ग्रहण करने योग्य है, चाहे प्राण देकर मिले; और यह लाल प्राप्त करने योग्य है, चाहे संपूर्ण अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। हे वंचित लोगो! इस स्रोत की ओर दौड़ो कि वह तुम्हें तृप्त कर दे। यह जीवन का स्रोत है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूँ और किस प्रकार इस शुभसूचना को हृदयों में स्थापित कर दूँ। किस ढंग से मैं बाज़ारों में उद्घोषणा करूँ कि यह तुम्हारा ख़ुदा तआला है ताकि लोग सुन लें, और किस औषधि से उपचार करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुल जाएँ।''

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

इस युग में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक के आचरण में और अपने स्वामी के अनुसरण में इस दैवी प्रेम की झलक हमें दिखाई देती है।

''मेरा तो यह हाल है कि यदि मुझे स्पष्ट ध्वनि आ जाए कि तू त्याग दिया गया है और तेरी कोई अभिलाषा हम पूरी नहीं करेंगे, तो मुझे ख़ुदा तआला की शपथ है कि इस दैवी प्रेम और धर्म-सेवा में कोई कमी नहीं आएगी; क्योंकि मैं तो उसे दख चुका हूँ।''

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

''अपने सबसे बढ़कर प्रिय, परम पवित्र सत्ता, ख़ुदा तआला का प्रेम भी, जो आपके प्राण और शरीर के कण-कण में लहराता था, आपके प्रत्येक कथन और प्रत्येक कर्म से हर समय प्रकट दिखाई देता था।

मैंने निर्धारित प्रार्थना-समयों के अतिरिक्त भी आपको अपने कृपालु पालनहार को अत्यंत व्याकुल होकर पुकारते सुना है।''

(रिवायत हज़रत सीद्दा नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा)

आपने अपने स्वामी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुकरण-परंपरा में बाल्यावस्था और युवावस्था से ही ख़ुदा तआला के प्रेम में अपना समय व्यतीत किया।

''जब कभी मुझे डलहौज़ी जाने का अवसर मिलता, तो पर्वतों के हरित भागों और बहते जल को देखकर स्वभाव में स्वतः ख़ुदा तआला की स्तुति का जोश उत्पन्न होता और उपासना में एक विशेष आनंद आता। मैं देखता था कि एकांत के लिए वहाँ उत्तम अवसर मिलता है।''

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

''ख़ुदा तआला की पवित्र सत्ता से आपका सच्चा प्रेम हर समय दिखाई देता था। मैंने एक बार आपको प्रार्थना करते और रोते देखा। अत्यंत पीड़ा के साथ अपने पालनहार, अपने प्रिय को पुकार रहे थे और बार-बार 'मेरे प्यारे अल्लाह, मेरे प्यारे अल्लाह' आपकी जिह्वा पर प्रवाहित हो रहा था... आप रसूल के प्रेमी थे सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम। आप अपने सर्वोच्च पालनहार के प्रेमी थे। आपके मुखमंडल पर उसी प्रेम का प्रकाश था। आपकी जिह्वा पर वही प्रकाश प्रवाहित था। आपकी वाणी से उसी प्रकाश के स्रोत प्रवाहित होते थे, किंतु नेत्रों से अंधे लोग देख न सके।''

(रिवायत हज़रत सीद्दा नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा)

''मैं तो देखता हूँ कि जब लोग संसार से बेखबर हो जाते हैं, जब मेरे मित्रों और शत्रुओं को भी ज्ञान नहीं होता कि मैं किस अवस्था में हूँ, उस समय तू मुझे जगाता है और प्रेम तथा स्नेह से कहता है कि दुःखी मत हो, मैं तेरे साथ हूँ। तो फिर हे मेरे पालनहार, यह कैसे संभव है कि इतने उपकार के होते हुए भी मैं तुझे छोड़ दूँ। कदापि नहीं, कदापि नहीं।'' (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दैवी प्रेम

नव वर्ष के अवसर पर जमाअत के सदस्यों को प्रार्थनाओं की प्रेरणा

प्रार्थना करें कि यह वर्ष हमारे लिए असंख्य आशीर्वादों का वर्ष बने। ख़ुदा तआला विरोधियों और शत्रुओं की योजनाओं को धूल में मिला दे और जमाअत को प्रगतियों से पहले से बढ़कर विभूषित करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पड़पोती, आदरणीया रैहाना बासिमा साहिबा, पत्नी सय्यद सैयद अहमद साहिब नासिर; आदरणीया इफ्फत हलीम साहिबा, राष्ट्रीय सदर लजना इमाइल्लाह लाइबेरिया; और आदरणीय अब्दुल अलीम अलबरबरी साहिब, मिस्र इनका शुभ उल्लेख तथा नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 जनवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन-चरित्र के संबंध में कुछ बातें की थीं। आज ख़ुदा तआला की प्रेमभावना के संदर्भ में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन के कुछ पक्ष प्रस्तुत करूँगा। संभव है कि कुछ बातें संक्षेप में पहले कही जा चुकी हों, किंतु यहाँ कुछ स्थानों पर उनका विस्तार भी है।

हम देखते हैं कि जीवन के इस पक्ष से ख़ुदा तआला का हुज़ूर सल्लल्लाहो

अलैहि व सल्लम से प्रेम भी प्रकट होता है। केवल हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ख़ुदा तआला से प्रेम ही नहीं, बल्कि ख़ुदा तआला का भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम है। और फिर इस प्रेम के प्रकट होने के बाद ख़ुदा तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मार्गदर्शन किया, और फिर किस प्रकार इस प्रेम में और बढ़कर आपने अपनी उम्मत का प्रशिक्षण किया और उसका मार्गदर्शन भी किया।

ख़ुदा तआला ने जो शिक्षा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर उतारी, उसे आपने किस प्रकार उम्मत तक पहुँचाया ताकि उनका मार्गदर्शन हो सके। इसके लिए आपके हृदय में एक पीड़ा थी; बल्कि यही पीड़ा थी जिसके कारण ख़ुदा तआला ने ही आपका मार्गदर्शन किया कि आपको उम्मत का भी मार्गदर्शन करना है। या यूँ कहें कि एक ओर आपके हृदय में ख़ुदा तआला के प्रेम की वेदना थी और दूसरी ओर ख़ुदा तआला की सृष्टि के लिए प्रेम की वेदना तथा उन्हें विनाश से बचाने की इच्छा थी।

ख़ुदा तआला क़ुरआन-ए-करीम में सूरा अल-दुहा में फ़रमाता है:

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى

और जब उसने तुझे अपनी क़ौम की चिंता में भटकता हुआ देखा तो उनकी सुधार का सही मार्ग तुझे बता दिया। और ख़ुदा तआला के प्रेम के दृष्टिकोण से इस आयत का अर्थ यह होगा कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि हमने तुझे अपनी प्रेमावस्था में अत्यंत व्याकुल देखा और अंततः तुझे वह मार्ग बता दिया जिस पर चलकर तू हमारे पास पहुँच गया।

तफ़्सीर-ए-कबीर इमाम राज़ी में सूरा अल-दुहा की आयत وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى की व्याख्या में लिखा है कि "ضَلَال" के एक अर्थ प्रेम भी होते हैं, जैसा कि ख़ुदा तआला के कथन إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ में "ज़लाल" का अर्थ अपनी प्रेमावस्था है। अतः भाव यह होगा कि तू प्रेमी है। फिर मैंने तुझे ऐसे मार्गों की ओर मार्गदर्शन दिया जिनके माध्यम से तू अपने प्रिय की सेवा कर के निकटता की मंज़िलें तय कर सकता है।

(मफ़ातीहुल-ग़ैब (तफ़्सीर-ए-कबीर), जिल्द 16, जुज़ 31, पृष्ठ 197, तफ़्सीर सूरा अल-दुहा, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2004)

इससे ख़ुदा तआला ने प्रमाण दे दिया कि तू ख़ुदा तआला के प्रेम में डूबा हुआ है।

इस प्रेम का प्रदर्शन हम विभिन्न रिवायतों में देखते हैं वह प्रेम जो ख़ुदा तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किया और जो प्रेम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा तआला से था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति क़ुरआन-ए-करीम की भाषाशैली को भलीभाँति जानता है, उस पर छिपा नहीं कि कभी-कभी वह कृपालु और दयालु प्रभु, अपने विशेष बंदों के लिए ऐसे शब्द प्रयोग कर देता है जो ऊपर से देखने में अनुचित लगते हैं, किंतु अर्थ में अत्यंत प्रशंसनीय होते हैं।

बाह्य रूप में यदि उस शब्द को सामान्य प्रयोग में देखें तो लगता है कि यह सही शब्द नहीं, क्योंकि "ضَال" का अर्थ भटका हुआ भी होता है। किंतु नहीं! जब ख़ुदा तआला अपने विशेष बंदों के लिए विशेष अवसर पर इसे प्रयोग करता है तो उसके अर्थ बदल जाते हैं। जैसा कि ख़ुदा तआला ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संबंध में फ़रमाया:

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى

अब स्पष्ट है कि "ضَال" के प्रसिद्ध अर्थ जो भाषाविदों में प्रचलित हैं, वे "भटका हुआ" के हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि उसी अर्थ को लिया जाए तो आयत का अर्थ होगा हे रसूल! ख़ुदा तआला ने तुझे भटका हुआ पाया और मार्गदर्शन दिया। जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कभी भी गुमराह नहीं हुए। और जो व्यक्ति मुसलमान होकर यह विश्वास रखे कि कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने जीवन में गुमराही का कार्य किया, वह काफ़िर है, अधर्मी है और शरीअत की दंड-व्यवस्था का अधिकारी है।

बल्कि यहाँ वही अर्थ लेने चाहिए जो आयत के संदर्भ से मेल खाते हैं। और वे यह हैं कि ख़ुदा तआला ने पहले फ़रमाया:

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوٰى. وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى. وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَأَغْنٰى

अर्थात ख़ुदा तआला ने तुझे अनाथ और असहाय पाया और अपने पास स्थान दिया, और तुझे "ضَال" अर्थात ख़ुदा तआला का प्रेमी पाया। अतः ख़ुदा तआला ने तुझे अपनी ओर खींच लिया। और तुझे दरवेश पाया, अतः तुझे समृद्ध कर दिया।

(उद्धारित आईना कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 5, पृष्ठ 171–170)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी पवित्र आंतरिकता, हृदय-विस्तार, निष्कलंकता, लज्जा, सत्यनिष्ठा, पवित्रता, भरोसा, वफ़ादारी और दैवी प्रेम के सभी गुणों में समस्त नबियों से बढ़कर और सर्वोत्तम थे, इसलिए ख़ुदा-ए-जल्ल शानहु ने उन्हें विशेष उत्कृष्टताओं की सुगंध से सबसे अधिक सुवासित किया। और वह वक्षस्थल और हृदय जो समस्त प्रथम और अंतिम लोगों के हृदयों से अधिक विस्तृत, पवित्र, निष्कलंक और उज्ज्वल था, वही इस योग्य ठहरा कि उस पर ऐसी वह्य उतरे जो सब पूर्व और पश्चात की वह्यों से अधिक शक्तिशाली, पूर्ण और उच्च हो; और वह दैवी गुणों के प्रदर्शन के लिए एक अत्यंत स्वच्छ, विस्तृत और विशाल दर्पण हो।"

"इसी कारण क़ुरआन शरीफ़ ऐसे उच्च गुण रखता है कि उसकी तीव्र किरणों के सामने सभी पूर्व ग्रंथों की चमक लुप्त हो जाती है। कोई बुद्धि ऐसी सच्चाई प्रस्तुत नहीं कर सकती जो उसमें पहले से न हो। कोई चिंतन ऐसा तर्क प्रस्तुत नहीं कर सकता जो पहले उसने न किया हो। कोई भाषण लाखों हृदयों पर वैसा प्रभाव नहीं डाल सकता जैसा वह डालता आया है। निस्संदेह वह ख़ुदा तआला के गुणों का अत्यंत स्वच्छ दर्पण है, जिससे साधक को उच्च ज्ञान की अवस्थाओं तक पहुँचने के लिए सब कुछ प्राप्त हो जाता है।"

(उद्धारित सुरमा चश्म-ए-आरिया, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 2, पृष्ठ 72–71, हाशिया)

अतः जो शिक्षा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर उतरी, वह भी अत्यंत पवित्र थी, सब शिक्षाओं से श्रेष्ठ। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अस्तित्व भी उस शिक्षा का धारक है अर्थात वह भी पूर्ण और श्रेष्ठ है। आपने सिद्ध किया कि जो पुस्तक आप पर उतरी, वह इसी कारण उतरी कि आपका अस्तित्व सब मनुष्यों से श्रेष्ठ है और आप ही वह पूर्ण मानव हैं जिनकी अवस्था तक कोई नहीं पहुँच सकता। हाँ, ख़ुदा तआला ने कहा है कि तुम्हारे लिए उनमें आदर्श है उनके अनुकरण का प्रयास करो।

इसीलिए ख़ुदा तआला ने आपके माध्यम से यह घोषणा भी करवा दी:

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (आले इमरान: 32)

तू कह दे: हे लोगो! यदि तुम ख़ुदा तआला से प्रेम रखते हो तो मेरा अनुसरण करो, तब वह भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे दोष क्षमा कर देगा। और ख़ुदा तआला अत्यंत क्षमाशील, बार-बार दया करने वाला है।

अतः ख़ुदा तआला से प्रेम प्राप्त करने के मार्ग भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श से ही सीखने होंगे।

ख़ुदा तआला से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रेम के जो दृश्य हमें दिखाई देते हैं, हदीसों में ऐसी अनेक रिवायतें मिलती हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने पालनहार से उसके प्रेम के याचक होते हुए यह दुआ किया करते थे कि…

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ وَالْعَمَلَ الَّذِي يُبَلِّغُنِي حُبَّكَ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي وَأَهْلِي وَمِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ۔

(जामे तिरमिज़ी, किताबुद-दअवात, बाब दुआ दाऊद: اللهم انی اسالك حبك وحب من يحبك । हदीस 3490)

हे ख़ुदा तआला! मैं तुझसे तेरी प्रेमभावना माँगता हूँ और उसकी प्रेमभावना भी जो तुझसे प्रेम करता है, और ऐसे कर्म की सामर्थ्य माँगता हूँ जो मुझे तेरी प्रेमभावना तक पहुँचा दे। हे ख़ुदा तआला! तू अपनी प्रेमभावना को मेरे लिए मेरी स्वयं की हस्ती, मेरे परिवार और ठंडे पानी से भी अधिक प्रिय बना दे।

अतः यह वह प्रार्थना है जो आज हर उस व्यक्ति को करनी चाहिए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम का दावा करता है और जो यह चाहता है कि वह भी ख़ुदा तआला से प्रेम का प्रदर्शन करे, ख़ुदा तआला का प्रिय

बने और ख़ुदा तआला उस पर अपना अनुग्रह करे।

इसी प्रकार एक रिवायत में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ख़त्मी अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थे:

हे ख़ुदा तआला! मुझे अपनी प्रेमभावना प्रदान कर और उसकी प्रेमभावना भी प्रदान कर जिसकी प्रेमभावना मुझे तेरे सम्मुख लाभ पहुँचाए। हे ख़ुदा तआला! मेरी प्रिय वस्तुएँ जो तू मुझे प्रदान करे, उन्हें अपनी प्रिय वस्तुओं की प्राप्ति के लिए मेरी शक्ति का साधन बना दे। और मेरी वे प्रिय वस्तुएँ जिन्हें तू मुझसे अलग कर दे, उन्हें भी मेरे लिए उन बातों की प्राप्ति का साधन बना दे जिन्हें तू प्रिय रखता है।

(जामे तिरमिज़ी, किताबुद-दअवात, बाब दुआ: اللّٰهم ارزقنی حبك وحب من ينفعنی حبه عندك। हदीस 3491)

अतः हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह दुआ की कि जो वस्तुएँ मुझे प्रिय हैं और जो तू मुझे देता है, उन्हें अपनी प्रिय वस्तुओं के लिए भी मेरी शक्ति का साधन बना दे, मुझे और सामर्थ्य दे, ताकि मैं उन बातों को अधिक प्राप्त करूँ जो तुझे प्रिय हैं, और उनके माध्यम से तेरी प्रेमभावना को अधिक प्राप्त करने वाला बनूँ। और फ़रमाया कि जो चीज़ें मुझे प्रिय हैं, जिन्हें मैं समझता हूँ कि वे मुझे प्रिय हैं या मेरे प्रिय लोग हैं, लेकिन तू उन्हें मुझसे अलग कर देता है, तो उन्हें मेरे लिए उन बातों की प्राप्ति का साधन बना दे जिन्हें तू प्रिय रखता है। जो चीज़ें मुझसे अलग हो गईं, उनके कारण निराशा नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसके बाद मुझे और शक्ति मिले, क्योंकि ख़ुदा तआला को वे प्रिय नहीं थीं या उसकी यही इच्छा थी, यही प्रसन्नता थी; तो जो बातें ख़ुदा तआला को प्रिय हैं वे मुझे मिल जाएँ। यदि ख़ुदा तआला मुझसे वे चीज़ें ले ले जो उसे पसंद नहीं, तो हे ख़ुदा तआला! जो तेरी प्रिय बातें हैं, उन्हें प्राप्त करने के लिए मुझे शक्ति प्रदान कर। यह ख़ुदा तआला से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रेमभावना का प्रदर्शन था।

इसी प्रकार हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ के नाज़िल होने के बाद नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कोई नमाज़ ऐसी नहीं पढ़ी जिसमें आप यह न कहते हों:

سُبْحَانَكَ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِي

अर्थात तू पवित्र है, हे हमारे पालनहार! तेरी स्तुति के साथ। हे ख़ुदा तआला! मुझे क्षमा कर दे।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुत-तफ़्सीर, सूरा इज़ा जा-अ नसरुल्लाह... हदीस 4967)

ख़ुदा तआला से प्रेम के एक प्रसंग का उल्लेख हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस प्रकार किया है कि एक रात मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास सोई हुई थी। रात में मैंने आपको पास न पाया। मैंने अंधेरे में आपको टटोला तो मेरा हाथ आपके चरणों पर पड़ा। आप सज्दे में थे और ख़ुदा तआला से यह दुआ कर रहे थे:

मैं तेरी प्रसन्नता की शरण में आता हूँ तेरी अप्रसन्नता से, और तेरी क्षमा की शरण में आता हूँ तेरी सज़ा से। मैं तेरी प्रशंसा का पूर्ण वर्णन नहीं कर सकता; तू वैसा ही है जैसा तूने स्वयं अपनी प्रशंसा की है।

(सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, हदीस 743)

अर्थात मैं तेरी उतनी प्रशंसा कर ही नहीं सकता जितनी तूने स्वयं अपने विषय में कही है।

इसी प्रकार हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा एक स्थान पर फ़रमाती हैं कि एक रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मेरे यहाँ बारी थी। मैं सो गई, तो आप चुपचाप बाहर चले गए। मुझे लगा कि शायद आप अपनी किसी दूसरी पत्नी के यहाँ चले गए हैं। मैं ईर्ष्या में बाहर निकली तो क्या देखती हूँ कि आप एक कपड़े की गठरी की तरह ज़मीन पर सज्दा किए हुए हैं। मैंने आपको यह कहते सुना:

سَجَدَ لَكَ سَوَادِي وَخَيَالِي وَآمَنَ بِكَ فُؤَادِي رَبِّ هَذِهِ يَدِي، وَمَا جَنَيْتُ عَلَى نَفْسِي، يَا عَظِيمُ تُرْجَى لِكُلِّ عَظِيمٍ فَاغْفِرِ الذَّنْبَ الْعَظِيمَ۔

हे ख़ुदा तआला! तेरे लिए मेरा शरीर और मेरी आत्मा सज्दे में हैं और मेरा हृदय तुझ पर ईमान लाता है। हे मेरे पालनहार! ये मेरे दोनों हाथ तेरे सामने फैले हैं और जो कुछ मैंने इनके साथ अपने ऊपर अत्याचार किया, वह भी तेरे सामने है।

अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो ऐसे पूर्ण मानव थे जिनसे नेकी के सिवा कुछ दिखाई नहीं देता, फिर भी आप यह कहते हैं कि मैंने अपने ऊपर जो अत्याचार किया वह तेरे सामने है। हे महान महिमा वाले! जिससे हर बड़ी बात की आशा की जाती है, तू बड़े से बड़े दोष क्षमा कर दे।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि फिर आपने अपना सिर उठाया और मुझे देख लिया और फ़रमाया: किस बात ने तुझे बाहर निकाला? तुम क्यों बाहर आ गईं? तुम तो सो रही थीं। उन्होंने निवेदन किया: उस विचार के कारण जो मेरे मन में आया था कि शायद आप दूसरी पत्नी के यहाँ चले गए हैं। आप ने फ़रमाया: निश्चय ही कुछ संदेह दोष बन जाते हैं। क्या तुझे मुझ पर शंका हुई? यह दोष है। ख़ुदा तआला से क्षमा माँगा करो। अतः बदगुमानी से बचने के लिए हर बात में ख़ुदा तआला से क्षमा माँगना आवश्यक है।

फिर आपने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए थे और उन्होंने मुझे ये शब्द पढ़ने को कहा था, इसलिए तुम भी अपने सज्दों में यह पढ़ा करो। अब तुमने सुन लिया है, इसे पढ़ा करो। जो व्यक्ति ये शब्द पढ़ेगा, वह सज्दे से सिर उठाने से पहले क्षमा किया जाएगा।

(मजमअज़-ज़वायद, किताबुस्सलात, हदीस 2775)

हाँ, यह शर्त भी है कि वह पूर्ण विश्वास रखने वाला हो, उसका ईमान दृढ़ हो और वह अन्य सद्कर्म भी करने वाला हो। यह नहीं कि बाकी सद्कर्म

छोड़े जाएँ और केवल यह दुआ पढ़ लेने से ही क्षमा हो जाएगी।

इसी प्रकार एक और रिवायत आती है जो अधिक विस्तार से सहीह मुस्लिम में है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि एक बार उस रात, जिसमें नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे यहाँ थे, आप घर लौटे, अपनी चादर रख दी, जूते उतारे और अपने पैरों के पास रख दिए, और अपनी ऊपर की चादर का एक किनारा बिस्तर पर बिछाया और लेट गए। कुछ देर बाद आपने समझा कि मैं सो गई हूँ, तो आपने धीरे से अपनी चादर ली, आहिस्ता से जूते पहने, दरवाज़ा खोला और बाहर चले गए, फिर दरवाज़ा भी धीरे से बंद कर दिया।

मैंने अपनी ओढ़नी और ऊपर की चादर ली और आपके पीछे चल पड़ी, यहाँ तक कि आप जन्नतुल बक़ीअ पहुँचे। आप खड़े हुए और लंबा समय खड़े रहे। फिर आपने तीन बार दोनों हाथ उठाए। फिर आप लौटे और मैं भी लौटी। आप तेज़ चलने लगे, मैं भी तेज़ चलने लगी। आपने चाल और तेज़ की तो मैंने भी कर ली। आप और तेज़ हुए, मैं भी तेज़ हुई। फिर आप घर आ गए और मैं आपसे पहले अंदर आकर लेट गई।

जब आप अंदर आए तो फ़रमाया: "ऐ आयशा! तुम्हें क्या हुआ, तुम्हारी साँस क्यों फूल रही है?" तेज़ चलने के कारण साँस फूल गई थी। मैंने कहा, कोई बात नहीं, और टालने की कोशिश की। आपने फ़रमाया: "तुम अवश्य बताओगी, नहीं तो सूक्ष्म जानने वाला ख़ुदा तआला मुझे बता देगा।"

मैंने कहा: "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों।" फिर मैंने सारी बात बता दी कि मेरे मन में क्या विचार आया था और मैं कैसे पीछे गई थी। आपने फ़रमाया: "अच्छा, तो वह साया तुम थीं जिसे मैंने अपने आगे देखा था?" मैंने कहा, जी हाँ। आपने मेरे सीने पर हल्का हाथ मारा, जो मुझे महसूस हुआ, और फ़रमाया: "क्या तुमने यह समझा था कि ख़ुदा तआला और उसका रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुम्हारा हक़ मारेंगे?"

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा: लोग जो कुछ छिपाते हैं, ख़ुदा तआला उसे जानता है। आपने फ़रमाया: "जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए थे जब तुमने देखा, और उन्होंने मुझे बुलाया था। उन्होंने यह बात तुमसे छिपाई, इसलिए मैंने भी तुमसे छिपाई। मुझे लगा तुम सो चुकी हो और मैंने पसंद न किया कि तुम्हें जगाऊँ। मुझे अंदेशा था कि तुम अकेलापन महसूस करोगी।"

जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा था कि आपका रब आपको आदेश देता है कि आप अहल-ए-बक़ीअ के पास जाएँ और उनके लिए क्षमा की दुआ करें। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैंने अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या मैं भी इस सवाब में शामिल हो सकती हूँ? मैं उनके लिए कैसे दुआ करूँ?" आपने फ़रमाया, तुम कहो:

"मोमिनों और मुसलमानों में से इन घर वालों पर सलाम हो। ख़ुदा तआला हममें से पहले जाने वालों और बाद में जाने वालों पर रहम करे। और अगर ख़ुदा तआला ने चाहा तो हम भी तुमसे आ मिलेंगे।"

(सहीह मुस्लिम, किताबुल जनाइज़, हदीस 1607)

इसी प्रकार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ुदा तआला से प्रेम के संबंध में एक रिवायत यूँ बयान हुई है। अता बयान करते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और उबैद बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सेवा में उपस्थित हुआ। हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सबसे प्यारी और आश्चर्यजनक बात जो आपने देखी हो, वह हमें बताइए।"

यह सुनकर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रो पड़ीं और फ़रमाया: "आपका हर मामला ही प्यारा और आश्चर्यजनक था।" फिर बताया कि एक रात आप मेरी बारी में मेरे पास आए, और जब आप मेरे साथ लिहाफ में आए और आपका शरीर मेरे शरीर से लगा, तो आपने फ़रमाया: "ऐ आयशा! यदि तुम अनुमति दो तो आज की शेष रात मैं अपने रब की इबादत करूँ।"

मैंने कहा: "मुझे आपका साथ भी प्रिय है और आपकी इच्छा भी प्रिय है।" फिर आप उठे, पानी की मश्क से वुज़ू किया, अधिक पानी नहीं बहाया। फिर खड़े होकर क़ुरआन पढ़ने लगे और रोने लगे, यहाँ तक कि आँसू आपके वस्त्र तक पहुँच गए। फिर आपने दाहिने पहलू पर टेक लगाई और दाहिना हाथ गाल के नीचे रखा और फिर रोने लगे, यहाँ तक कि आँसू ज़मीन तक पहुँच गए।

सुबह फ़ज्र का समय हुआ तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ की सूचना देने आए। उन्होंने आपको रोते देखा और कहा: "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप रो रहे हैं जबकि ख़ुदा तआला ने आपके अगले-पिछले सब दोष क्षमा कर दिए हैं।" आपने फ़रमाया: "क्या मैं कृतज्ञ बंदा न बनूँ?"

(अख़लाकुन-नबी , हदीस 553)

एक और रिवायत में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब आप बादल या आँधी देखते तो आपके चेहरे से चिंतन प्रकट होता। उन्होंने पूछा: "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! लोग बादल देखकर वर्षा की आशा से प्रसन्न होते हैं, लेकिन मैं देखती हूँ कि आप चिंतित हो जाते हैं।"

आपने फ़रमाया: "ऐ आयशा! मुझे क्या आश्वासन दे सकता है कि इसमें दंड की आँधी न हो। मैं अदृश्य का ज्ञान नहीं जानता। एक क़ौम पर दंड आया था, उन्होंने बादल देखा और कहा यह वर्षा का बादल है, लेकिन वह दंड लेकर आया।"

(सहीह अल-बुख़ारी, हदीस 3206 ,4829)

इसी प्रकार एक और रिवायत में आता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम बादल से गिरने वाली पहली बूंद के लिए अपना सिर खुला कर देते थे, और रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि यह हमारे रब्बे अज़्ज़ो-जल की तरफ़ से ताज़ा नेमत आई है और सबसे ज़्यादा बरकत वाली है।

(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द 1, जुज़ 2, पृष्ठ 267, किताबुल अज़कार / क़िस्मुल अफ़आल, औक़ातुल इजाबत, हदीस 4936। दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, 2004)

जब सामान्य वर्षा होती थी तो यह भी आपका तरीका था।

उरवा बिन ज़ुबैर की एक रिवायत है। वे कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि मुझे वह सबसे बुरा व्यवहार बताइए जो मुश्रिकों ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ किया था। उन्होंने बताया कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हतीम काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़्बा बिन अबी मुईत आया और उसने अपना कपड़ा आपकी गर्दन में डालकर आपका गला ज़ोर से घोंटना शुरू कर दिया। इतने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पहुंच गए और उन्होंने उक़्बा का कंधा पकड़कर उसे धक्का दिया और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अलग कर दिया। आपने कहा:

क्या तुम ऐसे व्यक्ति को मारते हो जो कहता है कि मेरा रब्ब अल्लाह है?

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित (उर्दू), जिल्द 7, पृष्ठ 332, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब मा लक़ियन नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम व असहाबहु मिनल मुश्रिकीन बि-मक्का, हदीस 3856। नज़ारत इशाअत, रब्वा)

वह तो केवल अल्लाह की मोहब्बत में सराबोर है, उसी में डूबा हुआ है और उसकी इबादत कर रहा है, और तुम उसे मारने पर तुले हुए हो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सारी ज़िंदगी इश्क़े इलाही में डूबी हुई थी। इन्हीं इश्क़े इलाही के नज़ारों को देखकर मक्का के लोग यही कहते थे: इन्ना मुहम्मदन अशिक़ा रब्बहू अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो अपने रब्ब पर आशिक़ हो गए हैं।

(अल-मुनक़िज़ मिन-अज़-ज़लाल, इमाम ग़ज़ाली, पृष्ठ 107, "तबतुलुन नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बि-हिरा दलील अल-इनक़िताअ इलल्लाह तआला", दारुल मिन्हाज, 2015)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक जात के आशिक़-ए-ज़ार और दीवाने हुए, और फिर वह पाया जो दुनिया में कभी किसी को नहीं मिला। आपको अल्लाह तआला से इतनी मोहब्बत थी कि आम लोग भी कहा करते थे कि अशिक़ा मुहम्मदुन अला रब्बिही यानी मुहम्मद अपने रब्ब पर आशिक़ हो गए।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 6, एडिशन 2022)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक और जगह फ़रमाते हैं:

"सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उस सच्चे व्यक्ति का चेहरा देखा था, जिसके अल्लाह के आशिक़ होने की गवाही कुफ्फार-ए-कुरैश की ज़बान से भी बेइख़्तियार निकल गई। रोज़ की मुनाजातों, प्यार भरे सज्दों, पूर्ण आज्ञापालन में मिट जाने की अवस्था, कमाल की मोहब्बत और दलेरी की मुख पर उजली निशानियां यानी चेहरे पर इश्क़ की रोशनी और उस पवित्र चेहरे पर नूर-ए-इलाही बरसते हुए देखकर वे कहते थे: अशिक़ा मुहम्मदुन अला रब्बिही कि मुहम्मद अपने रब्ब पर आशिक़ हो गए हैं।

और सहाबा ने केवल वह सच्चाई, प्रेम और निष्ठा ही नहीं देखी, बल्कि उस प्रेम के मुकाबले में जो हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल से दरिया की तरह उमड़ता था, अल्लाह तआला के प्रेम को भी असाधारण मददों के रूप में देखा। तब उन्हें पता लग गया कि अल्लाह है, और उनके दिल पुकार उठे कि वह अल्लाह इस पुरुष के साथ है। उन्होंने इतने अलौकिक निशान और आसमानी चिन्ह देखे कि उन्हें जरा भी संदेह न रहा कि वास्तव में एक महान सत्ता मौजूद है जिसका नाम अल्लाह है, जिसके अधिकार में हर बात है और जिसके सामने कोई काम असंभव नहीं। इसी कारण उन्होंने सच्चाई और पवित्रता के ऐसे कार्य दिखाए और ऐसी जानें कुर्बान कीं जो मनुष्य तब तक नहीं कर सकता जब तक उसके सारे संदेह दूर न हो जाएँ..."

(शहादतुल कुरआन, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 6, पृष्ठ 346)

ये बातें अनुभव के बिना संभव नहीं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आपके तरीके के बारे में पूछा तो आपने फ़रमाया:

"मआरिफ़त मेरा पूंजी है, अक़्ल मेरे दीन की जड़ है... (पूरा कथन ज्यों का त्यों)"

फिर एक हदीस में है कि आपने फ़रमाया:

"मेरे दिल का फल अल्लाह का ज़िक्र है और मेरा शौक़ मेरे रब्ब में है।"

(अश-शिफ़ा बि-तआरिफ़ हुक़ूक़ अल-मुस्तफ़ा, क़ाज़ी अयाज़, पृष्ठ 191, फ़स्ल फी ख़ौफ़िही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मिन रब्बिही..., हदीस 348–347, जायज़ा दुबई अद-दौलिया लिल-कुरआन अल-करीम, यूएई, 2013)

इस प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह आदर्श और अल्लाह तआला की मोहब्बत का नमूना था, जिसके कुछ उदाहरण मैंने पेश किए। इसी आदर्श का प्रभाव था कि सहाबा में एक क्रांति पैदा हुई...

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"मुझे ख़्वाब में दो बार पंजाबी में मिसरे बताए गए... 'जे तू मेरा हो रहें सब जग तेरा हो' ... और एक बार मैंने देखा... उसने यह शेर पढ़ा:

इश्क़ इलाही वस्से मुंह पर, वलियां एह निशानी"

(तज़किरा, पृष्ठ 440–439, एडिशन 2023)

अर्थात औलिया की निशानी यही है कि उनके चेहरे पर इश्क़-ए-इलाही बरसता है।

और आपने यह भी फ़रमाया कि जो कुछ मैंने पाया, वह रसूलुल्लाहह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञापालन में पाया।

(उद्धारित "हक़ीक़तुल वही", रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 22, पृष्ठ 64)

अतः यही आपका आदर्श था और इसी लिए आपने जमाअत कायम की।

आज हम जो यह दावा करते हैं कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे मानने वाले हैं और हमने आपके सच्चे सेवक के हाथ पर बैअत करके यह नवीनीकरण और वादा किया है कि आगे हम अपनी ज़िंदगियों को ख़ुदा तआला के आदेशों के अनुसार ढालने की कोशिश करेंगे, तो हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए कि हम हर काम केवल ख़ुदा तआला के लिए करें और उसकी मोहब्बत में आगे बढ़ने का प्रयास करें। जब हम ऐसा करेंगे तभी हम ख़ुदा तआला के फ़ज़्लों के वारिस बन सकेंगे, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में होने का सही हक़ अदा कर सकेंगे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का हक़ भी अदा कर सकेंगे और आपके सच्चे मानने वालों में गिने जा सकेंगे।

खुदा तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ प्रदान करे।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी आजकल दुआ करें। दो दिन पहले वहाँ एक मुक़दमा जो मुबारक सानी साहिब का चल रहा था, उन्हें सेशन जज ने उम्र क़ैद की सज़ा सुनाई है। आरोप यह है कि उनके पास क़ुरआन-ए-करीम रखा हुआ था, वे उसे पढ़ते भी थे और पढ़ाते भी थे। अब अदालतों की यह हालत है। उनसे क्या भलाई की आशा की जा सकती है। इस फ़ैसले पर तो ग़ैर लोगों ने भी लिखा है कि यह कितना हँसी का फ़ैसला है। यद्यपि कुछ मौलवियों की ओर से सामान्य रूप से इस फ़ैसले की बहुत प्रशंसा की जा रही है और जज की बड़ी तारीफ़ की जा रही है, लेकिन न्यायप्रिय लिखने वाले ऐसा लिखते हैं। कुछ लोगों ने मानो व्यंग्य में लिखा है कि इतना बड़ा अपराध है कि क़ुरआन-ए-करीम पढ़ता है, घर में रखा है और बच्चों को पढ़ाता है। यह इन नाम के आलिमों और उनके अनुयायियों की हालत है। सरकार की जो प्रशासनिक व्यवस्था है, वह भी इन मौलवियों के पीछे चलकर कुछ स्थानों पर इसी बात पर अमल कर रही है। बहरहाल हम दुआ करते हैं कि ख़ुदा तआला जल्द उनकी पकड़ के साधन पैदा करे। ख़ुदा तआला की पकड़ इंशा अल्लाह जल्द उन पर आएगी और उसके चिन्ह दिखाई भी दे रहे हैं, लेकिन यह चिंता भी होनी चाहिए कि हमारी दुआओं में कमी या कर्म और इबादत का हक़ सही रूप में अदा न करने के कारण इसमें देर न हो जाए, जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी कभी-कभी बादलों को देखकर इसी डर से दुआ किया करते थे। इसलिए दुआओं की ओर बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है।

इसी प्रकार संसार के दूसरे पीड़ित लोगों के लिए भी दुआ करें। ख़ुदा तआला हर जगह सबको शांति प्रदान करे और हर उपद्रव और अशांति से बचाए रखे।

नमाज़ के बाद मैं दो ग़ायब जनाज़ा पढ़ाऊँगा। दो व्यक्तियों का उल्लेख है। पहला उल्लेख मौलाना जलालुद्दीन नैयर साहिब का है। ये क़ादियान में पूर्व सदर, सदर अंजुमन अहमदिया और सदर मजलिस तहरीक-ए-जदीद थे। हाल ही में इनका देहांत हुआ। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। इनके आदरणीय पिता एच. हुसैन साहिब विश्व युद्ध के दौरान सेना में क्लर्क के रूप में कार्य कर रहे थे। उसी समय बसरा में 1922 में उन्होंने अहमदियत स्वीकार की और केरल से प्रकाशित होने वाली जमाअती पत्रिका "सतिया दूतन" (Sathiya Dooton) के संपादक नियुक्त हुए। वे केरल के रहने वाले थे। सेना की सेवा के बाद वहीं आ गए। स्वर्गीय के पिता एच. हुसैन साहिब 1950 में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तहरीक बराए आबादी क़ादियान पर लब्बैक कहते हुए अपना पूरा परिवार लेकर क़ादियान आ बसे, लेकिन एक वर्ष के भीतर ही उनका वहीं देहांत हो गया। मौलाना जलालुद्दीन साहिब नैयर की माता आदरणीया ज़ुबैदा सुल्ताना साहिबा ने बाद में चौधरी अब्दुल हक़ साहिब से विवाह कर लिया, जो दरवेश थे, और उन्होंने नैयर साहिब के भाई-बहनों की परवरिश अपने ज़िम्मे ले ली।

जलालुद्दीन नैयर साहिब की प्रारंभिक शिक्षा क़ादियान में हुई और 1963 में उन्होंने मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा पास की। फिर उनकी नियुक्ति हो गई। पहले अंजुमन में बैतुल माल के इंस्पेक्टर के रूप में लंबे समय तक सेवा की और पूरे भारत की जमाअतों का दौरा किया करते थे। बड़ी मेहनत और प्रेम से लोगों को चंदों के निज़ाम में शामिल किया। इसी कारण पूरे भारत में जमाअत के सदस्यों से उनका व्यक्तिगत संबंध था। तिरेसठ वर्ष तक उन्हें जमाअती सेवा की तौफ़ीक़ मिली। इस दौरान इंस्पेक्टर बैतुल माल आमद के बाद ऑडिटर, मुहासिब और फिर लंबे समय तक नाज़िर बैतुल माल आमद के रूप में सेवा का अवसर मिला। सात वर्ष तक वे सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान भी रहे और स्वास्थ्य ने जितनी अनुमति दी, सदर मजलिस तहरीक-ए-जदीद भी रहे। सहायक संगठनों में भी सेवा की तौफ़ीक़ मिली। इबादत करने वाले, रोज़ा और नमाज़ के पाबंद थे और ख़िलाफ़त के हर आदेश पर तुरंत अमल करने वालों में थे। खिलाड़ी और एथलीट भी थे और इस दृष्टि से भी संगठन में काम किया। इनका विवाह कश्मीर के एक परिवार में हुआ था और उनकी पत्नी पहले ही देहांत कर चुकी थीं। स्वर्गीय के दो पुत्र और एक पुत्री हैं, जो जमाअत की सेवा कर रहे हैं। ख़ुदा तआला उनसे मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे।

दूसरा उल्लेख मीर हबीब अहमद साहिब का है, जो मीर मुश्ताक अहमद साहिब के पुत्र थे। हाल ही में 79 वर्ष की आयु में उनका देहांत हुआ। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। अत्यंत दयालु, मिलनसार और ख़िलाफ़त पर जान देने वाले व्यक्ति थे। ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से मोसी भी थे। इनके परिवार में अहमदियत का प्रवेश इनके दादा बाऊ अब्दुर रहीम साहिब के माध्यम से हुआ, जिन्होंने हज़रत मीर क़ासिम अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, संपादक पत्रिका "फ़ारूक़" के माध्यम से 1903 में बैअत की थी। हज़रत मीर क़ासिम अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मीर हबीब साहिब के पिता मुश्ताक अहमद साहिब को गोद लिया था, क्योंकि उनकी अपनी कोई संतान नहीं थी। मीर हबीब साहिब ने गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से एफ.एस.सी., फिर बी.एस.सी. और उसके बाद एम.एस.सी. फ़िज़िक्स की डिग्री प्राप्त की। फिर विदेश भी गए।

1970 से 1971 तक तालीमुल इस्लाम कॉलेज में अध्यापक के रूप में सेवा की। 1973 से 1976 तक नुसरत जहाँ स्कीम के तहत सिएरा लियोन गए, जहाँ फ्री टाउन में फ़िज़िक्स के शिक्षक रहे। 1976 में पाकिस्तान लौटे, फिर उसी वर्ष नाइजीरिया चले गए और 1987 तक सरकारी स्कूल में कार्य किया। वहीं 1987 में जीवन वक़्फ़ कर दिया और वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी के रूप में 1987 में अहमदिया सीनियर सेकेंडरी स्कूल उमाइशा (Umaisha) में प्रिंसिपल नियुक्त हुए, जहाँ 1991 तक सेवा की। फिर पाकिस्तान लौटकर भी जमाअती सेवा करते रहे। 1992 में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने तकनीकी संस्थान के निरीक्षण के लिए उन्हें सिएरा लियोन भेजा। 1996 में नज़ारत तालीम के अंतर्गत नुसरत जहाँ अकादमी रब्वा में शिक्षक नियुक्त हुए और फ़िज़िक्स पढ़ाते रहे, वहीं से सेवानिवृत्त हुए। सदर उमूमी के दफ़्तर में भी स्वेच्छा से सुधार समिति में कार्य करते रहे।

उनकी पत्नी लिखती हैं कि वे रोज़ा-नमाज़ के पाबंद, अत्यंत नम्र स्वभाव के थे, कभी कोई माँग नहीं की। पढ़ने का बहुत शौक़ था। यदि कोई उपहार पूछता तो कहते मेरे लिए किताबें ले आओ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का भी अधिक अध्ययन करते थे। कभी झूठ नहीं बोलते थे; यदि कुछ न कहना हो तो चुप रहते थे। उनकी बेटी ने भी यही गुण बताए। मैं भी उन्हें जानता हूँ बहुत शरीफ़, अपने काम से काम रखने वाले और वक़्फ़ को वफ़ा से निभाने वाले थे। ख़ुदा तआला उनसे मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे।

उनका विवाह मीर इस्हाक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की नवासी सैय्यदा लुबना से हुआ था, जो मेजर सईद अहमद साहिब की बेटी थीं। हज़रत मीर मुहम्मद इस्हाक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पुत्र थे। उनका क़ुरआन-ए-करीम का अनुवाद भी जमाअत में प्रचलित है। बहरहाल ख़ुदा तआला स्वर्गीय से मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 16 जनवरी 2026, पृष्ठ 8–1)

★ ★ ★

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी क़ुरआन-ए-क़रीम की दृष्टि से

(सलीक अहमद नायक मुरब्बी सिल्सिला)

ख़ुदा तआला ने इस उपद्रवों से भरे युग में इस्लाम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई को प्रकट करने के लिए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम को अनेक महान चिन्ह प्रदान किए। उन चिन्हों में एक अत्यंत महान और विलक्षण चिन्ह "मुस्लेह मौऊद" की भविष्यवाणी है। यह भविष्यवाणी ऐसे समय में की गई जब इस्लाम तीव्र बौद्धिक और आस्थागत आक्रमणों का लक्ष्य बना हुआ था और मुस्लिम समाज दुर्बलता तथा विखंडन का शिकार था। इस भविष्यवाणी की पृष्ठभूमि, इसकी असाधारण महत्ता और गौरव, तथा इससे आशय किस महान व्यक्तित्व से है इन सभी बातों की विस्तृत स्पष्टता हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी लिखित कृतियों में पूर्ण रूप से विद्यमान है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की महान रचना "बराहीन-ए-अहमदिया" के प्रकाशित होते ही एक ओर संसार-ए-इस्लाम में आनंद और संतोष की लहर दौड़ गई, क्योंकि यह पुस्तक इस्लाम की सच्चाई के लिए एक दृढ़ प्रतिरक्षा थी; जबकि दूसरी ओर इस्लाम के विरोधियों के समूहों में तीव्र अशांति और हलचल उत्पन्न हो गई। इसी ऐतिहासिक पुस्तक में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने संसार को संबोधित करते हुए एक महान शुभ सूचना की घोषणा की:

"अतः ख़ुदावंद तआला ने इस तुच्छ सेवक को इस युग में उत्पन्न करके और सैकड़ों आकाशीय चिन्ह, अदृश्य चमत्कार, ज्ञान और सत्य प्रदान करके तथा सैकड़ों निर्णायक तर्कों का ज्ञान देकर यह अभिप्राय किया है कि सच्ची क़ुरआनी शिक्षाओं को प्रत्येक जाति और प्रत्येक देश में फैलाया और प्रचलित किया जाए और उन पर अपनी दलील पूर्ण कर दी जाए..... और प्रत्येक विरोधी स्वयं अपने पराजित और निरुत्तर होने का साक्षी बन जाए।"

(बराहीन अहमदिया, रूहानी ख़ज़ाइन, खंड 1, पृष्ठ –596 597, हाशिया दर हाशिया)

इस शुभ सूचना की घोषणा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने केवल भारत तक सीमित नहीं रखी, बल्कि अपने पत्रों के माध्यम से भारत से बाहर भी यह संदेश पहुँचाया। आपने अपनी सामर्थ्य के अनुसार जहाँ तक संभव हुआ, इस्लाम के विरोधियों पर प्रमाण पूर्ण किया।

जब इस्लाम की सच्चाई और सत्य के जीवित तथा प्रकाशमान चिन्हों की चर्चा संसार के कोनों में होने लगी और प्रत्येक विरोधी को इन चिन्हों के अवलोकन का सार्वजनिक निमंत्रण दिया जा रहा था, उसी समय 1885 ई० में क़ादियान के कुछ साहूकारों और अन्य हिंदू प्रमुख व्यक्तियों की ओर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में एक पत्र पहुँचा, जिसमें यह निवेदन प्रस्तुत किया गया था कि:

"जबकि आपने लंदन और अमरीका तक इस विषय के पंजीकृत पत्र भेजे हैं कि जो सच्चा साधक हो और एक वर्ष तक हमारे पास आकर क़ादियान में ठहरे तो ख़ुदा तआला उसे इस्लाम की सच्चाई के प्रमाण में अवश्य ऐसे चिन्ह दिखाएगा जो मानवी शक्ति से परे हों। अतः हम लोग जो आपके पड़ोसी और नगरवासी हैं, लंदन और अमरीका वालों से अधिक अधिकारी हैं..... किंतु हम ऐसे चिन्हों पर संतोष करते हैं जिनमें धरती और आकाश को उलटने-पलटने की आवश्यकता न हो और न प्रकृति के नियमों को तोड़ने की कोई आवश्यकता हो। हाँ, ऐसे चिन्ह अवश्य चाहिए जो मानवी शक्तियों से परे हों, जिनसे यह ज्ञात हो सके कि वह सच्चा और पवित्र ख़ुदा तआला (यहाँ भावार्थ: ख़ुदा तआला) आपकी धार्मिक सत्यनिष्ठा के कारण प्रेम और अनुकंपा से आपकी प्रार्थनाएँ स्वीकार कर लेता है और स्वीकृति से पहले सूचना देता है, या आपको अपने कुछ विशेष रहस्यों से अवगत करता है और भविष्यवाणी के रूप में उन छिपी बातों का समाचार देता है, या ऐसे अद्भुत ढंग से आपकी सहायता और समर्थन करता है जैसे वह प्राचीन काल से अपने चुने हुए, निकटवर्ती और विशेष भक्तों के साथ करता आया है..... और वर्ष, जो चिन्हों के दिखाने के लिए निर्धारित किया गया है, वह सितंबर 1885 ई० से गिना जाएगा, जिसका अंत सितंबर 1886 ई० के अंतिम दिनों तक हो जाएगा।"

(मजमूआ इश्तिहारात, खंड प्रथम, पृष्ठ 94–92)

इस पत्र के अंत में दस हिंदू सज्जनों के नाम अंकित हैं। इस पत्र के प्राप्त होने पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उत्तर में लिखा:

"..... हे चमत्कारों के दर्शन की प्रार्थना भेजने वाले सज्जनों! आपका कृपापत्र, जिसमें आपने आकाशीय चिन्हों के दर्शन के लिए निवेदन किया है, मुझे प्राप्त हुआ। चूँकि यह पत्र पूर्णतः न्याय और सत्य की खोज पर आधारित है और एक सत्य-प्रेमी समूह, जो पूर्ण दस की संख्या है, ने इसे लिखा है, इसलिए पूर्ण कृतज्ञता के साथ इसके विषय को स्वीकार करता हूँ और आपसे वचन करता हूँ कि यदि आप सज्जन उन प्रतिज्ञाओं के पालनकर्ता रहेंगे जो आपने अपने पत्र में की हैं, तो अवश्य सर्वशक्तिमान ख़ुदा तआला की सहायता और समर्थन से एक वर्ष के भीतर आपको ऐसा चिन्ह दिखाया जाएगा जो मानवी शक्ति से परे होगा। यह दास आपके न्यायपूर्ण पत्र को पढ़कर अत्यंत प्रसन्न हुआ....."

(मजमूआ इश्तिहारात, खंड प्रथम, पृष्ठ 95)

जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इश्तिहार से स्पष्ट है, आप उन हिंदू सज्जनों के उस पत्र से प्रसन्न थे जिसमें इस्लाम की सच्चाई के समर्थन में एक चिन्ह के प्रकट होने की माँग की गई थी। अतः आपने इस माँग को लेकर उस एकमात्र, अद्वितीय ख़ुदा तआला की ओर पूर्ण ध्यान और दृढ़ विश्वास के साथ रुख किया, जिसके निश्चित समर्थन और सहायता के वचनों से अवगत होकर आपने इस्लाम की सच्चाई की घोषणा की थी।

आपने अत्यंत विनय, दीनता और नम्रता के साथ उस चिन्ह के लिए प्रार्थनाएँ कीं। प्रार्थना में किसी भी प्रकार की बाधा से सुरक्षित रहने और अधिक एकाग्रता तथा गहराई उत्पन्न करने के उद्देश्य से आपने एकांत धारण करने का निश्चय किया। इसी उद्देश्य से आप अपने घर-परिवार और संबंधियों से अलग होकर होशियारपुर गए और वहाँ पूर्ण समर्पण, अलगाव और निष्कपटता के साथ ख़ुदा तआला के सम्मुख सज्दे में गिरकर प्रार्थनाओं में लगे रहे।

दयालु और कृपालु ख़ुदा तआला ने आपकी इस व्याकुलता, पीड़ा, तड़प और इस्लाम की सच्चाई के लिए बेचैन व्यग्रता को स्वीकार किया और आपको सांत्वना देते हुए प्रार्थनाओं को स्वीकृति का सम्मान प्रदान किया तथा एक महान चिन्ह की शुभ सूचना दी। इस शुभ सूचना की

घोषणा करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने इश्तिहार दिनांक 20 फ़रवरी 1886 ई० में कहा:

"मैं तुझे एक दया का चिन्ह देता हूँ, उसी के अनुसार जो तूने मुझसे माँगा। अतः मैंने तेरी विनतियाँ सुनीं और तेरी प्रार्थनाओं को अपनी दया से स्वीकृति का स्थान दिया और तेरी यात्रा (जो होशियारपुर और लुधियाना की यात्रा है) तेरे लिए शुभ कर दी। अतः शक्ति, दया और निकटता का चिन्ह तुझे दिया जाता है, अनुग्रह और उपकार का चिन्ह तुझे प्रदान होता है और विजय और सफलता की कुंजी तुझे मिलती है। हे विजयी! तुझ पर शांति हो! ख़ुदा ने यह कहा ताकि जो जीवन के इच्छुक हैं वे मृत्यु के पंजे से बचें और जो कब्रों में दबे पड़े हैं वे बाहर आएँ और ताकि इस्लाम धर्म का गौरव और कलामुल्लाह का दर्जा लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी सभी बरकतों के साथ आए और असत्य अपनी समस्त अपवित्रताओं के साथ भाग जाए और ताकि लोग समझें कि मैं समर्थ हूँ, जो चाहता हूँ वही करता हूँ, और ताकि वे विश्वास करें कि मैं तेरे साथ हूँ और ताकि उन्हें, जो ख़ुदा के अस्तित्व पर विश्वास नहीं लाते और ख़ुदा तथा उसके धर्म और उसकी पुस्तक और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अस्वीकार और झुठलाने की दृष्टि से देखते हैं, एक खुला चिन्ह मिले और अपराधियों का मार्ग प्रकट हो जाए।

अतः तुझे शुभ सूचना हो कि एक सुंदर और पवित्र बालक तुझे दिया जाएगा, एक शुद्ध सेवक (बालक) तुझे मिलेगा। वह बालक तेरे ही बीज से तेरी ही संतति और वंश होगा। सुंदर पवित्र बालक तुम्हारा अतिथि आता है। उसका नाम इम्मानुएल और बशीर भी है। उसे पवित्र आत्मा दी गई है और वह अपवित्रता से मुक्त है और वह नूरुल्लाह है। धन्य है वह जो आकाश से आता है। उसके साथ अनुग्रह है जो उसके आने के साथ आएगा। वह गौरव और महानता और संपन्नता वाला होगा। वह संसार में आएगा और अपने मसीही स्वभाव और रूहुलहक़ की बरकत से बहुतों को रोगों से शुद्ध करेगा। वह कलमतुल्लाह है क्योंकि ख़ुदा की दया और गौरव ने उसे प्रशंसा के शब्द के साथ भेजा है। वह अत्यंत बुद्धिमान और समझदार होगा और हृदय का कोमल होगा और प्रकट तथा गुप्त ज्ञानों से भर दिया जाएगा और वह तीन को चार करने वाला होगा (इसका अर्थ समझ में नहीं आया)। सोमवार है, मुबारक सोमवार। प्रिय, आदरणीय पुत्र। प्रकट करने वाला प्रथम और अंतिम का, प्रकट करने वाला सत्य और उच्चता का, मानो ख़ुदा आकाश से उतर आया हो। जिसका अवतरण अत्यंत शुभ और दैवी महिमा के प्रकट होने का कारण होगा। प्रकाश आता है, प्रकाश, जिसे ख़ुदा ने अपनी प्रसन्नता की सुगंध से अभिषिक्त किया। हम उसमें अपनी आत्मा डालेंगे और ख़ुदा की छाया उसके सिर पर होगी। वह शीघ्र शीघ्र बढ़ेगा और बंदियों की मुक्ति का कारण होगा और पृथ्वी के छोरों तक प्रसिद्धि पाएगा और जातियाँ उससे बरकत पाएँगी। तब अपने आत्मिक बिंदु से आकाश की ओर उठाया जाएगा।

وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا।"

(मजमूआ इश्तिहारात, खंड प्रथम, पृष्ठ 102–100)

इसी इश्तिहार में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी संतति और परिवार के फलने-फूलने के संबंध में ख़ुदा तआला के वचनों का उल्लेख करते हुए कहा:

"फिर खुदाए करीम जल शानहु ने मुझे शुभ सूचना देकर कहा कि तेरा घर बरकत से भर जाएगा और मैं अपनी नेमतें तुझ पर पूरी करूँगा और धन्य स्त्रियों से जिनमें से कुछ को तू बाद में पाएगा तेरी संतान बहुत होगी। और मैं तेरी संतान को बहुत बढ़ाऊँगा और बरकत दूँगा, परन्तु उनमें से कुछ कम आयु में भी मृत्यु पाएँगे। और तेरी संतान बहुतायत से देशों में फैल जाएगी और तेरे पैतृक भाइयों की हर एक शाख काट दी जाएगी और वे शीघ्र निःसंतान होकर समाप्त हो जाएँगे, यदि वे तौबा नहीं करेंगे तो ख़ुदा उन पर विपत्ति पर विपत्ति उतारेगा, यहाँ तक कि वे नष्ट हो जाएँगे। उनके घर विधवाओं से भर जाएँगे और उनकी दीवारों पर क्रोध उतरेगा। पर यदि वे लौट आएँगे तो ख़ुदा दया के साथ लौटेगा। ख़ुदा तेरी बरकतें चारों ओर फैला देगा और एक उजड़ा हुआ घर तुझसे आबाद करेगा और एक भयावह घर को बरकतों से भर देगा। तेरी संतान कभी समाप्त नहीं होगी और अंतिम दिनों तक हरी-भरी रहेगी। ख़ुदा तेरे नाम को उस दिन तक, जब दुनिया समाप्त हो जाएगी, सम्मान के साथ क़ायम रखेगा और तेरी पुकार को दुनिया के छोरों तक पहुँचा देगा। मैं तुझे उठाऊँगा और अपनी ओर बुला लूँगा, पर तेरा नाम धरती के पृष्ठ से कभी नहीं उठेगा। और ऐसा होगा कि वे सब लोग जो तेरी बेइज़्ज़ती की चिंता में लगे हैं और तेरी असफलता के पीछे पड़े हैं और तुझे नष्ट करने का विचार रखते हैं, वे स्वयं असफल रहेंगे और असफलता और निराशा में मरेंगे। पर ख़ुदा तुझे पूरी सफलता देगा और तेरी सारी मनोकामनाएँ तुझे प्रदान करेगा।

मैं तेरे सच्चे और हृदय से प्रेम करने वालों का समूह भी बढ़ाऊँगा और उनके प्राणों और धन में बरकत दूँगा और उनमें वृद्धि करूँगा और वे मुसलमानों के उस दूसरे समूह पर क़ियामत के दिन तक प्रभावी रहेंगे जो ईर्ष्या करने वालों और विरोधियों का समूह है। ख़ुदा उन्हें नहीं भूलेगा और न भुलाएगा, और वे अपनी-अपनी निष्ठा के अनुसार अपना-अपना प्रतिफल पाएँगे। तू मुझे ऐसा है जैसे बनी इस्राईल के नबी (अर्थात् छाया रूप में उनसे समानता रखता है)। तू मुझे ऐसा है जैसे मेरी एकता। तू मुझसे है और मैं तुझसे हूँ। और वह समय आता है बल्कि निकट है कि ख़ुदा बादशाहों और अमीरों के दिलों में तेरी मोहब्बत डाल देगा, यहाँ तक कि वे तेरे वस्त्रों से बरकत ढूँढेंगे।

हे इन्कार करने वालो और सत्य के विरोधियो! यदि तुम मेरे बंदे के संबंध में संदेह में हो, यदि तुम्हें उस कृपा और अनुग्रह से कुछ इन्कार है जो हमने अपने बंदे पर किया, तो इस दया के चिन्ह के समान तुम भी अपने संबंध में कोई सच्चा चिन्ह प्रस्तुत करो, यदि तुम सत्यवादी हो। और यदि तुम प्रस्तुत न कर सको और याद रखो कि हरगिज़ प्रस्तुत न कर सकोगे तो उस आग से डरो जो अवज्ञा करने वालों, झूठों और सीमा से बढ़ने वालों के लिए तैयार है। बस।"

इसी इश्तिहार के अगले ही महीने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक और इश्तिहार 22 मार्च 1886 ई० में इस भविष्यवाणी के बारे में ख़ुदा तआला के एक और वचन का उल्लेख करते हुए कहा:

"…. ऐसा लड़का ख़ुदा तआला के वचनके अनुसार नौ वर्ष की अवधि के भीतर अवश्य उत्पन्न होगा, चाहे शीघ्र हो चाहे देर से, परन्तु इस अवधि के अंदर अवश्य जन्म लेगा।"

(मजमूआ इश्तिहारात, खंड प्रथम, पृष्ठ 113)

अतः ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार वह प्रतिज्ञात पुत्र भविष्यवाणी के ठीक तीन वर्ष बाद 23 मार्च 1889 ई० को उत्पन्न हुआ, और यही शुभ दिन जमाअत अहमदिया का स्थापना दिवस है।

★ ★ ★

मुस्लेह मौऊद का स्थान भविष्यवाणियों की रोशनी में

श्रीमान इनायतुल्लाह साहब, इडीशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद, तालीमुल क़ुरआन व वक़्फ़-ए-आर्ज़ी, क़ादियान

ख़ुदा तआला की यह सनत है कि वह आने वाले समय में भेजे जाने वाले नबियों, रसूलों और उनके उत्तराधिकारियों के बारे में पहले से ही भविष्यवाणियों के माध्यम से सूचना दे देता है। उनकी विशेषताएँ, उनकी निशानियाँ और उनके हालात बताकर पहले ही उनकी महानता प्रकट कर देता है।

चुनाँचे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिन्हें ख़ुदा तआला ने ख़ातमन नबिय्यीन और समस्त संसार के लिए दया बनाकर भेजा, और जिनके बारे में हदीस-ए-कुदसी में है "लौलाक लमा ख़लकतुल अफ़लाक", उनके अधीन भेजे जाने वाले इमाम महदी की भी सूचना दी गई थी।

इसी महान भविष्यवाणी का उल्लेख करते हुए क़ुरआन-ए-करीम में ख़ुदा तआला फरमाता है:

"हुवल्लज़ी बअस फ़िल उम्मिय्यीना रसूलन मिन्हुम यतलू अलैहिम आयातिही व युज़क्कीहिम व युअल्लिमुहुमुल किताब वल हिक्मह व इन् कानू मिन क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम मुबीन। व आख़रीना मिन्हुम लम्मा यल्हकू बिहिम, व हुवल अज़ीज़ुल हकीम।"

(सूरह जुमा, आयत 3–2)

वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक महान रसूल भेजा, वह उन पर उसकी आयतें पढ़ता है, उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब और हिकमत की शिक्षा देता है, जबकि इससे पहले वे खुली गुमराही में थे। और उन्हीं में से दूसरों की ओर भी (उसे भेजा है) जो अभी उनसे नहीं मिले। और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला, हिकमत वाला है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत की व्याख्या में फ़रमाते हैं:

"इस आयत का सार यह है कि ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने ऐसे समय में रसूल भेजा जब लोग ज्ञान और हिकमत से वंचित हो चुके थे और धार्मिक ज्ञान, जिससे आत्मा की पूर्णता होती है और मनुष्य के प्राण ज्ञान और कर्म में पूर्णता पाते हैं, बिल्कुल लुप्त हो गया था और लोग गुमराही में पड़े थे। तब ऐसे समय में ख़ुदा तआला ने अपना अनपढ़ रसूल भेजा और उस रसूल ने उनके प्राणों को पवित्र किया और उन्हें किताब और हिकमत से भर दिया... फिर फ़रमाया कि एक और समूह है जो अंतिम समय में प्रकट होगा। वे भी पहले अंधकार और गुमराही में होंगे और ज्ञान, हिकमत और यक़ीन से दूर होंगे। तब ख़ुदा उन्हें भी सहाबा के रंग में ले आएगा, अर्थात् जो कुछ सहाबा ने देखा वह उन्हें भी दिखाया जाएगा, यहाँ तक कि उनका सत्य और यक़ीन भी सहाबा के सत्य और यक़ीन के समान हो जाएगा।

और सही हदीस में है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस आयत की व्याख्या करते समय सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के कंधे पर हाथ रखा और फ़रमाया: 'लौ कानल ईमानु मुअल्लकन बिस्सुरय्या लनालहू रजुलुम मिन फ़ारस' अर्थात् यदि ईमान सुरैया तारे (आकाश की ऊँचाई) पर भी चला जाए तो भी एक फ़ारसी मूल का व्यक्ति उसे वापस लाएगा। यह संकेत है कि अंतिम समय में एक फ़ारसी मूल का व्यक्ति पैदा होगा... यही वह समय है जो मसीह मौऊद का समय है, और वही फ़ारसी मूल वाला व्यक्ति मसीह मौऊद है।"

(अय्यामुस सुल्ह, रूहानी ख़ज़ाइन, खंड 14, पृष्ठ 306–305)

किताब हक़ीक़तुल वही में फ़रमाया:

"व आख़रीना मिन्हुम लम्मा यल्हकू बिहिम" अर्थात उम्मते मुहम्मदिया में से एक और समूह है जो बाद में अंतिम समय में आएगा... और सही हदीस में है कि इस आयत के समय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु की पीठ पर हाथ मारा और फ़रमाया: 'लौ कानल ईमानु मुअल्लकन बिस्सुरय्या लनालहू रजुलुम मिन फ़ारस'।

और यह मेरे बारे में भविष्यवाणी थी, जैसा कि ख़ुदा तआला ने बराहीन-ए-अहमदिया में इस भविष्यवाणी की पुष्टि के लिए वही हदीस वह्यी के रूप में मुझ पर उतारी, और वह्यी के अनुसार मुझसे पहले इसका कोई निश्चित व्यक्ति नहीं था, और ख़ुदा की वह्यी ने मुझे निश्चित कर दिया। फ़ल्हम्दुलिल्लाह।"

(हक़ीक़तुल वही, रूहानी ख़ज़ाइन, खंड 22, पृष्ठ 407, हाशिया)

सहीह मुस्लिम की किताब फ़ज़ाइलुस सहाबा के बाबु रजुलिन फ़ारिस में वर्णित हदीस में "रजुल" के स्थान पर "रिजाल" शब्द आया है, जो इस ओर संकेत करता है कि सूरह जुमा की आयत "व आख़रीना मिन्हुम" में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अधीनता में भेजे जाने वाले जिस महान अस्तित्व, अर्थात् इमाम महदी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सूचना दी गई है, उनके बाद उनके मिशन को आगे बढ़ाने के लिए उनकी जमाअत और वंश में से और भी महान व्यक्तित्व ख़ुदा तआला उत्पन्न करेगा, जिनके माध्यम से वह अपने स्थापित किए हुए सिलसिले को सारे संसार में फैलाकर उसे प्रभुत्व देगा।

चुनाँचे हदीस की पुस्तक मिश्कात में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"यनज़िलु ईसा बिन मरियम इला अल-अर्ज़, यतज़व्वजु व यूलदु लहू"

(मिश्कात, बाब नुज़ूल ईसा अलैहिस्सलाम)

अर्थात हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पृथ्वी पर आएँगे, विवाह करेंगे और उन्हें संतान दी जाएगी।

इस हदीस की व्याख्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा तआला से सूचना पाकर कहा कि मसीह मौऊद विवाह करेंगे और उनके यहाँ संतान होगी। इसमें संकेत है कि ख़ुदा तआला उन्हें ऐसा नेक पुत्र देगा जो सद्गुणों में अपने पिता के समान होगा, विरोधी नहीं होगा, और वह ख़ुदा के आदरणीय बंदों में से होगा।"

(आइना कमालाते इस्लाम, पृष्ठ 528)

एक अन्य स्थान पर आप लिखते हैं:

"यह भविष्यवाणी कि मसीह मौऊद की संतान होगी, इस ओर संकेत है कि ख़ुदा उनकी नस्ल से एक व्यक्ति को उत्पन्न करेगा जो उनका उत्तराधिकारी होगा और इस्लाम धर्म की सहायता करेगा, जैसा कि मेरी कुछ भविष्यवाणियों में उल्लेख आ चुका है।"

(हक़ीक़तुल वही, पृष्ठ 312)

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आगमन और उनकी नस्ल से होने वाले प्रतिज्ञात खलीफ़ा के संबंध में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी की पुष्टि प्राचीन आध्यात्मिक ग्रंथों में भी

मिलती है।

यहूदियों की धार्मिक पुस्तक तालमूद में लिखा है कि:

“यह भी कहा जाता है कि वह (मसीह) निधन कर जाएगा और उसका राज्य उसके बेटे और पोते को मिलेगा...”

(तालमूद, संपादक जोज़फ़ बार्कले, अध्याय 5, लंदन, 1878)

ज़रतुश्ती धर्म के ग्रंथ दसातीर में भी भविष्यवाणी मिलती है (उर्दू अनुवाद के अनुसार):

“जब अरबी शरीअत पर एक हज़ार वर्ष बीत जाएँगे तो धर्म में विभाजन हो जाएगा... लोग परस्पर शत्रुता में बढ़ते जाएँगे... तब यदि समय में एक दिन भी बाकी रह जाए तो मैं तेरे लोगों में से एक व्यक्ति को खड़ा करूँगा जो तेरी खोई हुई प्रतिष्ठा वापस लाएगा और उसे फिर स्थापित करेगा। मैं पैग़ंबरी और पेशवाई (नुबुव्वत व ख़िलाफ़त) तेरी नस्ल से नहीं उठाऊँगा।”

इस अंतिम वाक्य में संकेत है कि अंतिम समय का प्रतिज्ञात जब आएगा तो उसकी संतान में से कोई उसका उत्तराधिकारी होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि रहमत के उतरने का दूसरा तरीका यह है कि ख़ुदा तआला अपने भेजे हुए लोगों, नबियों, इमामों, औलिया और ख़लीफ़ाओं को भेजता है, ताकि लोग उनकी पैरवी और मार्गदर्शन से सीधी राह पर आ जाएँ और उनके नमूने पर अपने आप को ढाल कर नजात पा लें। अतः ख़ुदा तआला ने चाहा कि इस फक़ीर की औलाद के ज़रिये ये दोनों बातें ज़ाहिर हो जाएँ।

(सब्ज़ इश्तिहार, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 2, पृष्ठ 453, हाशिया)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में हज़रत शाह नियामतुल्लाह साहिब इल्हाम और कशूफ़ वाले एक बुज़ुर्ग वली गुज़रे हैं, जिन्होंने मसीह की दूसरी आमद और उनके यहाँ एक महान बेटे के बारे में पेशगोई की है। यह पेशगोई फ़ारसी की पद्य रचना में है। उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रकट होने से पहले के इन्कलाबों का चित्र खींचते हुए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने और नाम की निशानदेही की और एक महान यादगार बेटे की खुशखबरी इन शब्दों में दी:

“ا ح م و دال مے خوانم نام آں نامدار مے بینم
دور او چوں شود تمام بکام پسرش یاد گا رمے بینم”

अनुवाद: जब उसका ज़माना कामयाबी के साथ पूरा हो जाएगा तो उसके बाद उसके ज़ाहिर होने पर उसका बेटा उसकी यादगार बना रहेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब निशान आसमानी में इस पेशगोई के आखिरी शेर की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि मतलब यह है कि ख़ुदा तआला उसे एक परहेज़गार लड़का देगा, जो उसके नमूने पर होगा और उसके रंग में रंग जाएगा, और वह उसके बाद उसका यादगार होगा। यह दरअसल उस पेशगोई के मुताबिक है जो इस फक़ीर के बारे में एक लड़के के संबंध में की गई थी।

(निशान आसमानी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 4, पृष्ठ 373)

जमाअत अहमदिया मुस्लिम इस बात पर पूरा यक़ीन रखती है, और जमाअत अहमदिया के 136 साल के इतिहास का हर दिन और हर पल इस बात की गवाही देता है कि इस ज़माने के संबंध में पुरानी मुकद्दस किताबों में जो पेशगोइयाँ पाई जाती हैं, जिनके अनुसार सय्यदुल अंबिया ख़ातमन नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गुलामी में आपके जिस पूर्ण बुरूज़ और रूहानी फ़रज़ंद को प्रकट होना था, उसका मिस्दाक़ बानी जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम की बरकत वाली ज़ात है।

ख़ुदा तआला ने पुरानी मुकद्दस किताबों की पेशगोइयों के अनुसार आपकी सच्चाई के सबूत के तौर पर जहाँ और बहुत से, बल्कि हज़ारों बल्कि लाखों निशान और मोजिज़े आपको अता किए, वहीं एक खास दर्जे और अहमियत का निशान नेक और सालेह औलाद, जो आपकी जानशीन होने वाली हो अता किए जाने का महान निशान भी है।

सैय्यदना हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम को औलाद के बारे में जो खुशखबरियाँ दी गईं, उनमें पेशगोई मुस्लेह मौऊद को खास स्थान हासिल है। जब पंडित लेखराम, कुछ ईसाई पादरियों और कुछ अपने आपको मुसलमान कहने वालों ने इस पर बेअदबी की बातें कीं, तो उसे सुनकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक इश्तिहार शाया किया। उसमें इस पेशगोई की महानता के बारे में फ़रमाया:

“आँखें खोल कर देख लेना चाहिए कि यह केवल एक पेशगोई ही नहीं, बल्कि एक महान आसमानी निशान है, जिसे ख़ुदा तआला ने अपने प्यारे नबी करीम रऊफ़ व रहीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई और महानता ज़ाहिर करने के लिए प्रकट किया है।”

पेशगोई मुस्लेह मौऊद इस लिहाज़ से भी बहुत ऊँचे दर्जे की पेशगोई है कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु पर ख़ुदा तआला ने जनवरी 1944 में क़ियाम लाहौर के दौरान एक महान रोया के ज़रिये यह ज़ाहिर किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 20 फ़रवरी 1886 को होशियारपुर की सरज़मीन से जिस मुअूद बेटे की पैदाइश का ऐलान किया था और जिसके बारे में बताया था कि वह मसीही नफ़्स होगा, जल्दी-जल्दी बढ़ेगा, ज़ाहिरी और बातिनी इल्म से भरा जाएगा, ज़मीन के किनारों तक शोहरत पाएगा और क़ौमें उससे बरकत पाएँगी आदि उस पेशगोई का मिस्दाक़ आप ही हैं।

इस इल्हामी खुलासे के बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने 28 जनवरी 1944 को मस्जिद अक़्सा क़ादियान में यह शानदार ऐलान किया कि मैं ही मुस्लेह मौऊद की पेशगोई का मिस्दाक़ हूँ। आपने बताया कि जो रोया दिखाई गई, उसके दौरान मेरी ज़बान पर यह जुमला जारी हुआ:

“وانا المسیح الموعود مثیلہ و خلیفہ”

और मैं भी मसीह मौऊद हूँ, यानी उसका मिसील और उसका ख़लीफ़ा हूँ।

(माखूज़ अज़ तारीख़ अहमदियत, जिल्द 8, पृष्ठ 519–512,
माहनामा अहमदिया गज़ट कनीडा, फ़रवरी 2015)

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी ख़िलाफ़त के बारे में फ़रमाते हैं: मैं ख़लीफ़ा नहीं, बल्कि मुअूद ख़लीफ़ा हूँ। मैं मामूर नहीं, मगर मेरी आवाज़ ख़ुदा तआला की आवाज़ है। ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रिये इसकी खबर दी थी। यानी यह ख़िलाफ़त का दर्जा मामूरियत और ख़िलाफ़त के बीच का दर्जा है, और यह ऐसा मौका नहीं कि जमाअत अहमदिया इसे यूँ ही खो दे और फिर ख़ुदा तआला के सामने सरखरू हो जाए। जिस तरह यह बात सही है कि नबी रोज़-रोज़ नहीं आते, उसी तरह यह भी सही है कि मुअूद ख़लीफ़ा भी रोज़-रोज़ नहीं आते।

(रिपोर्ट मजलिस मशावरत 1936)

ऐ फ़ज़ल उमर, तेरे करीमाना गुण याद आकर हर रूह को दीवाना बना देते हैं।

हर रोज़ तेरे जैसे इंसान नहीं लाती यह रोज़ाना गर्दिश, यह ज़माने की गर्दिश।

एक वक़्त आएगा कि सब लोग कहेंगे मिल्लत के इस फ़िदाई पर ख़ुदा तआला रहमत करे।

★ ★ ★

उलुल-अज़्म हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु

सैयद ऐजाज़ुद्दीन, मुबल्लिग़ सिलसिला, हुबली कर्नाटक

ख़ुदा तआला की ओर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का निशान अपनी क़ुदरत, रहमत और क़ुर्ब का एक विशेष चिन्ह बनाकर प्रदान किया गया था। हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मुबारक ज़िंदगी को दो बड़े दौरों में बाँटा जा सकता है। एक वह समय जब आप इमाम-ए-ज़माना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और उसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के साये में रहे, और दूसरा वह दौर जब आप स्वयं ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुए।

यह एक मानी हुई सच्चाई है कि हर इंसान की ज़िंदगी में हालात के उतार-चढ़ाव आते हैं और अलग-अलग समयों में उसे परीक्षाओं, चुनौतियों और विरोध का सामना करना पड़ता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िंदगी भी इन बातों से खाली नहीं थी। चूँकि ख़ुदा तआला की ओर से नियुक्त समय का इमाम अपने अनुयायियों के लिए एक मज़बूत ढाल होता है, इसलिए उसकी मौजूदगी में लोगों पर संघर्ष का बोझ कुछ कम हो जाता है, क्योंकि इमाम स्वयं उनके लिए ढाल बनता है।

इस तरह 1914 तक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए भी यही स्थिति थी, जब आपके लिए यह ढाल पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु की सूरत में मौजूद रही। लेकिन जब आप स्वयं ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुए तो हालात बदल गए। अब आप स्वयं अपने अनुयायियों के लिए ढाल बन गए और जमाअत का सारा बोझ उठाना आपकी ज़िम्मेदारी ठहरा। इस महान ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए, भविष्यवाणी के अनुसार, ख़ुदा तआला ने आपको असाधारण दृढ़ निश्चय, स्थिरता और गहरी समझ दी और आपको "उलुल-अज़्म" के दर्जे पर स्थापित किया।

रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "अल-इमामु जुन्नतुन" यानी इमाम ढाल होता है। उसके पीछे रहकर लड़ाई की जाती है। इस हदीस की रोशनी में यह बात साफ़ होती है कि लोगों को समय के इमाम की अगुवाई में और उसके पीछे रहकर संघर्ष करना चाहिए। इसलिए 1914 के बाद से यह स्थिति आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर शुरू हो गई और बड़े विरोधों का सामना आरंभ हो गया।

(1) शुरू में यह विरोध उन लोगों की ओर से सामने आया जो हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौर में जमाअत के अंदर प्रमुख स्थान रखते थे। ये लोग अलग-अलग पदों पर थे, बाहरी रौब रखते थे और दुनियावी हिसाब से उच्च शिक्षा पाए हुए थे। इन्हीं बाहरी शैक्षिक विशेषताओं के आधार पर उन्होंने हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु को तिरस्कार भरे अंदाज़ में केवल "एम. महमूद" कहकर पुकारा और आपकी नेतृत्व क्षमता को विचार के स्तर पर चुनौती दी।

इन लोगों का व्यवहार असहयोग, ठंडेपन और पूर्ण उपेक्षा से भरा हुआ था। उस समय उनके घमंड का अंदाज़ उन बातों से होता है जो इतिहास का हिस्सा बन चुकी हैं। डॉक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग ने घमंड से कहा:

"हम जा रहे हैं, मगर अगले दस वर्षों के अंदर क़ादियान के इस मदरसे में सिर्फ़ ईसाई ही ईसाई होंगे।"

इसी तरह एक और प्रमुख विरोधी ने कहा:

"हम जा रहे हैं, मगर ये लोग हमें नाक रगड़कर बुलाएँगे।"

और यह वादा किया जाने लगा कि दस साल के भीतर मौलवी मुहम्मद अली साहब अपने साथियों सहित क़ादियान को जीतकर रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समान बनकर इज़्ज़त के साथ क़ादियान में प्रवेश करेंगे।

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, जिल्द 3, पृष्ठ 9; आईना-ए-सदाक़त, पृष्ठ 180)

खुले तौर पर यह भी कहा जाने लगा कि चंदा बंद हो जाएगा और ये लोग भूखों मरेंगे, तब इन्हें होश आएगा। इन घमंडी बातों का जवाब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उलुल-अज़्मी के साथ यह दिया:

"मेरे ख़ुदा ने मुझ पर यह इल्हाम उतारा है कि कौन है जो ख़ुदा के कामों को रोक सके।"

(अनवारुल उलूम, जिल्द 15, पृष्ठ 590, ख़िलाफ़त-ए-राशिदा)

ख़ैर, ये लोग बड़े-बड़े दावे और धमकियाँ देते हुए क़ादियान के स्थायी केंद्र को छोड़कर चले गए। एक 25 साल के नौजवान को, जो मैट्रिक भी पास नहीं था, छोटा समझकर तो चले गए, लेकिन चूँकि उसके पीछे ख़ुदाई मदद थी, इसलिए कुछ ही दिनों में उनकी समझ ठिकाने आ गई।

फिर उन्होंने एक चाल चली। ख़ुदा तआला ही बेहतर जानता है कि यह चाल हार मानने का असर थी या खुशामद। यह चाल यह थी कि 24 मार्च 1914 को लाहौर में एक बैठक की और अपने फ़ैसले के तहत एक प्रतिनिधिमंडल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में भेजा। उन्होंने कहा:

"साहबज़ादा साहब (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु) के चुनाव को हम इस हद तक जायज़ मानते हैं कि वे ग़ैर-अहमदियों से 'अहमद' के नाम पर बैअत लें, यानी उन्हें अपनी जमाअत में शामिल करें, लेकिन पुराने अहमदियों से दोबारा बैअत लेने की ज़रूरत नहीं समझते। इस हैसियत से हम उन्हें अमीर मानने को तैयार हैं, मगर बैअत की ज़रूरत नहीं होगी, और अमीर को यह अधिकार भी नहीं होगा कि सदर अंजुमन अहमदिया को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा दिए गए अधिकारों में कोई दख़ल दे।"

(परिशिष्ट, अख़बार पैग़ाम-ए-सुलह, 2 अप्रैल 1914; उद्धृत: अल-फ़ुरक़ान, मई-जून 1965, पृष्ठ 24)

इस मनगढ़ंत शर्तों वाली सुलह की पेशकश का जवाब उलुल-अज़्म हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन शब्दों में दिया:

"जो जवाब हमें साहबज़ादा साहब की तरफ़ से मिला, उससे साबित है कि वे एक इंच तो क्या, 1000/1 हिस्सा भी अपनी जगह छोड़ने को तैयार नहीं। जो करना है, उसका फ़ैसला अभी कर लो।"

(अख़बार पैग़ाम-ए-सुलह, 31 मार्च 1914; उद्धृत: अल-फ़ुरक़ान, मई-जून 1965, पृष्ठ 24)

जब नर्मी से बात नहीं बनी तो उन्होंने सख़्ती का रास्ता अपनाना चाहा और सुलह के नाम पर धमकी भी शुरू कर दी। इन्हीं दिनों शेख़ तैमूर साहब, जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के प्रशंसक और क़रीबी थे, अलीगढ़ में रहते थे। विरोधियों ने उन्हें लिखा कि किसी तरह इस "फ़ितने" को दूर करो। इस पर उन्होंने अलीगढ़ से तार भेजा कि तुरंत इन लोगों से सुलह कर लो, वरना अंजाम अच्छा नहीं होगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब लिखा:

"तुम्हारा ख़त मिला। तुम मुझे सलाह देते हो कि मैं इन लोगों से सुलह कर लूँ, मगर मेरे ख़ुदा ने मुझ पर यह इल्हाम उतारा है: 'कौन है जो ख़ुदा के कामों को रोक सके।' इसलिए मैं सुलह नहीं कर सकता... तुम ख़ुदा की एक बड़ी दलील के नीचे हो... तुमने हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल की ज़बान से मेरे

बारे में बार-बार वह बातें सुनी हैं जिनसे ज़ाहिर होता था कि उनके बाद ख़ुदा तआला मुझे ख़िलाफ़त के स्थान पर खड़ा करेगा... फिर तुम खुद मेरे बारे में एक किताब लिख रहे थे... अब तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं... मेरा इन्कार कर के तुम नास्तिकता तक पहुँच जाओगे..."

और वास्तव में एक महीने के अंदर वह नास्तिक हो गया और आज तक खुलकर ख़ुदा के अस्तित्व का इंकार करता है...

(ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, अनवारुल उलूम, जिल्द 15, पृष्ठ –563 564)

मौखिक धमकियों के बाद मुक़दमे के ज़रिये भी डराने की कोशिश की गई। हक़ीक़त यह है कि ख़्वाजा कमालुद्दीन साहब ने उन्हीं दिनों दिसंबर 1914 में "अंदरूनी इख़्तिलाफ़ात सिलसिला के असबाब" शीर्षक से एक किताब लिखी। उसमें दूसरी बातों के अलावा धमकी भी दी गई थी। इसका ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं:

"बाक़ी रहा मुक़दमे का सवाल कि मुक़दमा होगा और अदालतों तक जाना पड़ेगा तो यह ऐसी धमकियाँ हैं जो हमेशा सच्चे लोगों को मिलती रही हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़त्ल के लिए किसरा ने अपने आदमी भेजे थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अदालतों में घसीटा गया। इसी तरह अगर कोई मुझे भी अदालत में बुलवाए या अंजुमन पर मुक़दमा करे तो क्या हर्ज है? जब मैंने ख़ुदा के लिए और सिर्फ ख़ुदा के लिए इस काम को अपने ज़िम्मे लिया है बल्कि यूँ कहो कि ख़ुदा तआला ने यह काम मेरे सुपुर्द किया है तो अब मुझे इस बात का क्या डर कि अंजाम क्या होगा। मैं जानता हूँ कि अंजाम हर हाल में बेहतर होगा, क्योंकि यह ख़ुदा तआला का मुझसे वादा है और वह सच्चे वादों वाला है। तो आप मुझे मुक़दमों से क्या डराते हैं। हमारा मुक़दमा ख़ुदा के दरबार में पेश है। क्या यह असंभव है कि दुनिया की सरकारें हमारे झगड़े का फ़ैसला करें उससे पहले अहकमुल हाकिमीन खुद ही हमारे मुक़दमे का फ़ैसला कर दे? और जब सरकार दख़ल दे दे तो किसी मातहत अदालत का क्या हक़ है कि कुछ कर सके। अगर ख़ुदा तआला ही ऐसा फ़ैसला कर दे जिससे सब फ़साद दूर होकर अमन हो जाए, तो दुनिया की सरकारों का क्या दख़ल रह जाता है। मुक़दमों से उन्हें डराओ जिनकी नज़र सिर्फ दुनिया के साधनों पर है। कोई दुनियावी हुकूमत हमें उस स्थान से नहीं हटा सकती जहाँ ख़ुदा तआला ने हमें खड़ा किया है, क्योंकि दुनियावी सरकारों का असर शरीर पर होता है, दिल पर नहीं और दिल तो सिर्फ ख़ुदा तआला के क़ब्ज़े में हैं।"

(अल-क़ौलुल फ़स्ल, अनवारुल उलूम, जिल्द 2, पृष्ठ 311)

अब तक जिन लोगों का ज़िक्र था, वे हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सच्चा मानने वालों में से थे। आगे उन लोगों का भी थोड़ा उल्लेख किया जाता है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इंकार करने वाले, तकफ़ीर करने वाले और झुठलाने वालों में थे। उलुल-अज़्मी की विशेषता केवल आप तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह आपको हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उलुल-अज़्मी के सदक़े मिली थी। इसलिए पहले मिसाल के तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उलुल-अज़्मी के कुछ घटनाएँ पेश की जाती हैं।

वास्तविक घटना है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खुदादाद मक़बूलियत देखकर आसपास के देशों के बादशाह भी प्रभावित होने लगे थे। संक्षेप घटना यह है कि ईरान के किसरा ने यमन के अपने गवर्नर के माध्यम से दो सिपाही भेजे ताकि (नऊज़ुबिल्लाह) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गिरफ़्तार करके उसके पास पेश किया जाए। लेकिन नादान किसरा को पता नहीं था कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा तआला की ओर से उलुल-अज़्मी की विशेषता प्राप्त थी। इस संदेश के जवाब में आपने फ़रमाया: "अपने गवर्नर से जाकर कह दो कि मेरे ख़ुदा ने आज रात तुम्हारे स्वामी को मार दिया है।" अंत वही हुआ जो ख़ुदा तआला ने तय कर दिया था।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बुरूज़-ए-कामिल हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोधियों और तकफ़ीर करने वालों में से एक व्यक्ति पूरे देश में घूम-घूमकर आपके खिलाफ तकफ़ीर के फ़तवे देता था और दावा करता था कि "मैंने ही इसे उठाया था और अब मैं ही इसे गिराऊँगा।" उसे यह मालूम न था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह ग़ुलाम भी खुदादाद उलुल-अज़्मी रखता है। उसके इन कामों के जवाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा से ज्ञान पाकर फ़रमाया:

"ऐ वह व्यक्ति जो मेरी तकफ़ीर के लिए कमर बाँधे हुए है, सुन ले ख़ुदा ने मुझे बता दिया है कि तेरी इन हरकतों से मेरा कुछ भी नुक़सान नहीं होगा, बल्कि तेरा ही घर उजड़ेगा।"

एक और घटना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जुड़ी है। शेख फ़ज़ल इलाही साहब चिट्ठी-रसाँ ने बयान किया: "एक बार मैं डाक लेकर हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सेवा में जा रहा था। जब डिप्टी शंकरदास के मकान के सामने से गुज़रा तो वह बाहर चारपाई पर बैठा था। उसने मुझे बुलाकर कहा ग़ुलाम अहमद से कह दो कि लड़के जब मस्जिद में आते हैं तो शोर करते हैं, हमें तकलीफ़ होती है, उन्हें मना कर दें। मैंने जाकर हुज़ूर को कहा तो आपने फ़रमाया 'यह मकान हमारे क़ब्ज़े में आने वाला है। ख़ुदा ने हमें इस मकान का वादा दिया है।'"

(अल-हकम, जिल्द 38, नंबर 14 ,9 मार्च 1935, पृष्ठ 4)

आज वह मकान मस्जिद अक्सा का हिस्सा बन चुका है।

इन्हीं रास्तों पर चलते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की उलुल-अज़्मी के भी अनेक दृश्य प्रकट हुए। उनमें से दो घटनाएँ:

1935 में मजलिस अहरार राजनीतिक समर्थन के बल पर चुनौती दे रही थी कि क़ादियान की ईंट से ईंट बजा देंगे, मीनारतुल मसीह को तोड़कर दरिया ब्यास में बहा देंगे, आदि। उलुल-अज़्म हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन बातों का सीधा जवाब न देकर केवल ख़ुदा की मदद का ज़िक्र किया और फ़रमाया: "ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल हम पर हो रहे हैं, और मुझे यही नज़र आ रहा है कि अहरार के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक रही है।"

दूसरी घटना 1953 की है, जब पाकिस्तान में एंटी-अहमदिया आंदोलन चल रहा था। मौलाना मौदूदी साहब ने संदेश भेजा कि या तो गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यक मान लो या हमारे पसंद के अक़ीदे अपनाओ, वरना गंभीर ख़तरा है। जवाब में कहा गया कि यह विरोध भी वही है जो हर नबी के समय हुआ आख़िरकार जीत इलाही जमाअत की ही होती है।

ऐसे माहौल में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने ऐलान किया:

"मौलाना मौदूदी के अनुयायियों की हुकूमत, ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से, हरगिज़ नहीं बनेगी।"

(क़ादियानी मसअला का जवाब, पृष्ठ 123)

जिसे ख़ुदा ने उलुल-अज़्म बनाया, उसे वैसी ही ताक़तें भी दीं। यहाँ केवल संक्षेप में कुछ झलकियाँ पेश की गई हैं, वरना उदाहरण बहुत हैं और यह सब दीन-ए-इस्लाम की शान के लिए है।

दुआ है कि ख़ुदा तआला इस उलुल-अज़्म हज़रत मुस्लेह मौऊद के दर्जे बुलंद करे। आमीन।

इक वक़्त आएगा कि कहेंगे तमाम लोग,
मिल्लत के इस फ़िदाई पर रहमत ख़ुदा करे।

★ ★ ★

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की भाषण-शक्ति

अतहर अहमद शमीम, प्रबंधक साप्ताहिक 'बदर' क़ादियान

अपनी भाषण-शक्ति का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला ने 'सुल्तानुल क़लम' ठहराया था। उसके मुक़ाबले में उसने मुझे इतना बोलने का मौक़ा दिया कि उसने मुझे 'सुल्तानुल बयान' बना दिया।"

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, जिल्द 2, पृष्ठ 334, फ़रमूदह 23 सितंबर 1950, तालीमुल इस्लाम कॉलेज, लाहौर)

ढूँढें तो कहाँ ढूँढें, पाएँ तो कहाँ पाएँ,
सुल्तान-ए-बयाँ, तेरा अंदाज़-ए-ख़तीbबाना।

भूमिका

हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद, ख़लीफ़तुल मसीह सानी, मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की वाक्-शक्ति केवल शब्दों का मेल नहीं थी, बल्कि सोच और चेतना की एक बहती हुई धारा थी, जिसकी लहरों में तर्क की ताक़त भी थी और भाषा की मिठास भी। जब आप भाषण के मंच पर आते, तो शब्द मानो आपके विचारों के अधीन हो जाते और अर्थ आपके स्वर की दृढ़ता से नया रूप ले लेते। आपके कथन में वह आकर्षक लय थी जो सुनने वालों के दिल जीत लेती, और वह गहराई थी जो बुद्धि को नए क्षितिज दिखाती। निस्संदेह, आपका बोलने का ढंग अरबी की वाक्पटुता और अन्य भाषाओं की अभिव्यक्ति-कला का सुंदर संगम था, जो इस युग में भाषण-कला की शान था। विभिन्न विषयों पर आपके भाषण इस कला की पूरी झलक दिखाते हैं।

सय्यदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला ने बहुत सी ऐसी भविष्यवाणियाँ दीं जो अपनी सच्चाई और महानता में दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हुईं और आपके ख़ुदा की ओर से होने का स्थायी चिन्ह बनीं। इन सब चिन्हों में "पेशगोई मुस्लेह मौऊद" एक विशेष स्थान रखती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम के द्वारा उस महान पुत्र की खुशखबरी दी गई जो इस्लाम की सच्चाई का जीवित चिन्ह बना। इस पूरी भविष्यवाणी में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में 52 निशानियाँ बताई गईं, जो आपको दूसरों से अलग करती हैं।

इस भविष्यवाणी की कुछ पंक्तियाँ, जो इस लेख से संबंधित हैं, इस प्रकार हैं:

"वह प्रतिष्ठा, महानता और संपन्नता वाला होगा। वह दुनिया में आएगा और अपने मसीही स्वभाव और रूहुल हक़ की बरकत से बहुतों को बीमारियों से शुद्ध करेगा... वह अत्यंत बुद्धिमान और समझदार होगा और दिल का नरम... उसे बाहरी और भीतरी ज्ञान से भर दिया जाएगा... उसका आना बहुत शुभ होगा और ख़ुदा तआला का प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा... हम उसमें अपनी रूह डालेंगे और ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा... वह धरती के कोनों तक प्रसिद्धि पाएगा और क़ौमें उससे बरकत पाएँगी..."

(इश्तिहार 20 फ़रवरी 1886, मजमूआ इश्तिहारात, जिल्द 1, पृष्ठ –101 102)

इस भविष्यवाणी का हर शब्द अपने आप में एक बड़ी भविष्यवाणी है। दुनिया की नज़र में शायद इतने गुण एक व्यक्ति में इकट्ठे होना असंभव लगे, लेकिन यह उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा का वचन था, जिसके लिए कुछ भी असंभव नहीं। जो ख़ुदा ने चाहा, वह होकर रहा।

इतिहास गवाही देता है कि सभी रुकावटों और कठिन हालात के बावजूद ये भविष्यवाणियाँ अक्षरशः पूरी हुईं। दुनिया ने देखा कि हज़रत मसीह पाक अलैहिस्सलाम के घर जन्म लेने वाला वह "वादा किया हुआ पुत्र" सचमुच "मुस्लेह मौऊद" बनकर पूरी चमक के साथ प्रकट हुआ। ख़ुदा तआला का सहायता हमेशा आपके साथ रही। आपने तेज़ी से उन्नति के चरण तय किए और भविष्यवाणी के हर पहलू को पूरा किया।

स्नेहपूर्ण बातचीत और आकर्षक वाणी

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की शख़्सियत प्रेम, प्रसन्नता और गहरी करुणा का सुंदर मेल थी। आप केवल महान नेता ही नहीं, बल्कि दयालु मार्गदर्शक भी थे, जो बच्चों से लेकर बड़ों तक हर व्यक्ति से सम्मान और प्यार से पेश आते। आपके यहाँ इंसान की इज़्ज़त सबसे पहले थी।

आपकी बातचीत में गंभीरता और ज्ञान के साथ-साथ ऐसी मिठास होती जो दिलों में उतर जाती। क़ुरआन की तिलावत हो या भाषण, आपकी आवाज़ का प्रभाव सुनने वालों पर विशेष भावावस्था पैदा कर देता। यही कारण था कि आपके भाषण घंटों चलते, मगर श्रोता थकते नहीं थे।

शारीरिक कमज़ोरी से क़ुरआनी ज्ञान के सागर तक

जब इंसान आपके बचपन की हालत और आपके विद्वत्तापूर्ण स्थान का तुलना करता है, तो चकित रह जाता है। बचपन में आँखों की बीमारी और जिगर की तकलीफ़ के कारण आप नियमित शिक्षा से वंचित रहे। शिक्षक भी पढ़ाई छोड़ने की सलाह देते थे। लेकिन ख़ुदा तआला का योजना कुछ और थी। वही बच्चा जब ग्यारह वर्ष की आयु में "अंजुमन तशहीज़ुल अज़हान" के मंच पर खड़ा हुआ, तो उसके मुँह से निकलने वाले ज्ञान ने बड़े विद्वानों को भी आश्चर्य में डाल दिया। यह उस भविष्यवाणी का प्रारंभिक प्रकट होना था कि उसे बाहरी और भीतरी ज्ञान से भर दिया जाएगा।

उस भाषण के बारे में हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहब क़ादियानी कहते हैं:

"वह भाषण क्या था ज्ञान का दरिया और आध्यात्मिकता का समुद्र था... मौलाना नूरुद्दीन साहब खड़े हुए, भाषण की बहुत प्रशंसा की, दुआएँ दीं और बड़े सम्मान से घर तक छोड़ने आए।"

(साप्ताहिक बदर क़ादियान, 6 फ़रवरी 2002)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बौद्धिक ज़िंदगी बहुत विस्तृत थी। आपने अनेक विषयों पर यादगार भाषण दिए और लेख लिखे। ये आज भी मार्गदर्शन का स्रोत हैं।

साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुज़फ़्फ़र अहमद साहब आपके भाषण के प्रभाव का वर्णन करते हुए कहते हैं:

"हुज़ूर की शख़्सियत में अद्भुत आकर्षण था... आपकी आवाज़ प्रभावशाली और मन मोह लेने वाली थी... लोग कहते थे अंदर जादू है, हम बैअत कर लेंगे हुज़ूर ने फ़रमाया: 'अगर कोई जादू है तो मेरी आवाज़ में है, और वह बाहर भी पहुँच रही है।'"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद की याद में, रोज़नामा अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 2 मई 2024)

यह घटना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की उस "सुल्तानुल बयानी" और अत्यंत आकर्षक आवाज़ का प्रत्यक्ष प्रमाण है, जिसके प्रभाव में सुनने वाले अनजाने ही बंध जाते थे। आपकी आवाज़ में ऐसा रौब और खिंचाव था जो दिलों की गहराइयों तक उतर जाता था। आपका यह कहना कि "अगर कोई जादू है तो वह मेरी आवाज़ में है", वास्तव में उस ख़ुदा-दिया भाषण-कौशल की शक्ति का स्वीकार था, जिसके सामने पंडाल के अंदर और बाहर मौजूद हर व्यक्ति बेबस हो जाता था। आपकी तकरीर में इतनी प्रभावशीलता थी कि विरोधी इस डर से अपने कानों में उंगलियाँ ठूँस लेते थे कि कहीं यह आवाज़ उनके विश्वासों की नींव न हिला दे और वे बैअत करने पर मजबूर न हो जाएँ। यही कारण था कि लोगों की ज़ुबान पर यह चर्चा आम हो गई थी कि "अंदर कोई जादू हो रहा है।" यह जादू दरअसल उस "पसरे मौऊद" की वह चुंबकीय शख़्सियत थी, जिसे ख़ुदा ने वाक्पटुता और उच्च अभिव्यक्ति के सर्वोच्च स्थान पर बैठाया था। जो लोग पंडाल के अंदर होते, वे अपनी सारी ज़रूरतों और दुनिया-जहान से बेख़बर होकर घंटों आपकी बातों के मोती समेटते रहते। आपकी इसी बेमिसाल भाषण-कला और प्रभाव ने दुनिया को यह मानने पर मजबूर कर दिया कि:

उच्च कोटि के वक्ता

आपकी इसी बेमिसाल भाषण-कला और प्रभाव ने दुनिया को यह स्वीकार करने पर विवश कर दिया कि महान वक्ता वही होता है जो अपने शब्दों से श्रोताओं के दिलों को छू ले और कठिन से कठिन सच्चाइयों को भी सरल ढंग से बयान कर दे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हुके भाषणों में असाधारण असर, बौद्धिक स्पष्टता और भावनात्मक संतुलन मौजूद था, जो न केवल श्रोताओं के दिमाग को तर्कों से संतुष्ट करता था बल्कि उनकी आत्माओं को भी नए जोश से भर देता था।

श्रीमान साहबज़ादा मिर्ज़ा मुज़फ़्फ़र अहमद साहब, अमीर जमाअत अहमदिया अमेरिका फ़रमाते हैं:

"हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत ऊँचे दर्जे के वक्ता थे। मैंने दुनिया में बहुत सफ़र किया है और विश्व के प्रसिद्ध नेताओं को सुनने का अवसर मिला है, मगर मैंने किसी को भी भाषण-कला में हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु के आस-पास भी नहीं पाया। आपके बारे में कहा जा सकता है कि आप अपने भाषण से पहाड़ों को हिला सकते थे। इस सच्चाई पर जमाअत के हजारों नहीं, लाखों लोग गवाह हैं। आप श्रोताओं को पूरी तरह अपने प्रभाव में रखते थे। हिजरत के तुरंत बाद आपने पाकिस्तान के विभिन्न शहरों में देश की समस्याओं और उनके समाधान पर व्याख्यान दिए। इस्लामिया कॉलेज के एक प्रोफ़ेसर, जो मेरे एक दोस्त के साथ बैठे थे, अचानक बोल उठे कि 'हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु को पाकिस्तान का प्रधानमंत्री होना चाहिए।' इससे पहले 'इस्लाम में मतभेदों की शुरुआत' विषय पर व्याख्यान के अवसर पर इस्लामिया कॉलेज के इतिहास के प्रोफ़ेसर ने आपकी प्रशंसा करते हुए कहा, 'विद्वान पिता का विद्वान बेटा।' उन्होंने कहा कि मैं अपने आपको इस्लामी इतिहास का जानकार समझता था, लेकिन आपका व्याख्यान सुनने के बाद महसूस हुआ कि मैं तो बिलकुल शुरुआती विद्यार्थी हूँ।"

इस्लामिया कॉलेज लाहौर का ऐतिहासिक कार्यक्रम और ज्ञानपूर्ण उपलब्धि

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हुकी "सुल्तानुल बयानी" का एक महान प्रदर्शन वह ऐतिहासिक व्याख्यान है जो आपने इस्लामिया कॉलेज लाहौर में "मार्टिन हिस्टॉरिकल सोसायटी" के तहत "इस्लाम में मतभेदों की शुरुआत" विषय पर दिया। इस्लामी इतिहास पर आपका अधिकार इतना पूर्ण और विद्वत्तापूर्ण था कि प्रसिद्ध इतिहासकार भी हैरान रह गए।

इस विद्वत्तापूर्ण भाषण पर टिप्पणी करते हुए सैयद अब्दुल क़ादिर साहब (एम.ए., प्रोफ़ेसर इस्लामिया कॉलेज लाहौर) लिखते हैं:

"विद्वान पिता के विद्वान पुत्र हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब का नाम ही इस बात की गारंटी है कि यह भाषण अत्यंत विद्वत्तापूर्ण है। मैं दावे से कह सकता हूँ कि बहुत कम इतिहासकार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर की गृह-कलह के असली कारणों तक पहुँच सके हैं। हज़रत मिर्ज़ा साहब न केवल उन कारणों को समझने में सफल रहे, बल्कि उन्होंने अत्यंत स्पष्ट और तर्कपूर्ण ढंग से उन घटनाओं को बयान किया है। मेरा ख़्याल है कि इस तरह का तर्कपूर्ण लेख इस्लामी इतिहास में रुचि रखने वालों ने पहले कभी नहीं देखा होगा।"

(इस्लाम में मतभेदों की शुरुआत, भूमिका, प्रकाशित नवंबर 1930)

अहमदिया हॉस्टल लाहौर का एक भाषण

इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था के विषय में लाहौर के अहमदिया हॉस्टल में हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक भाषण हुआ।

"यह भाषण लगभग ढाई घंटे तक चलता रहा। इसमें अहमदी मित्रों के अलावा हजारों मुस्लिम और गैर-मुस्लिम सम्मानित लोग भी शामिल थे।" ये पढ़े-लिखे लोग थे। गैर-अहमदी मुसलमान और अन्य गैर-मुस्लिम भी, "जिनमें अधिकतर उच्च शिक्षित वर्ग, पंजाब यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर और विद्यार्थी शामिल थे। भाषण के दौरान प्रोफ़ेसर, वकील और अन्य विद्वान लोग बड़ी संख्या में नोट्स लेते रहे।"

(अनवारुल उलूम, जिल्द 18, परिचय पुस्तक "इस्लाम का आर्थिक सिस्टम", पृष्ठ 1)

"इस भाषण को उपस्थित लोगों ने इतने ध्यान से सुना कि इतने लंबे समय तक लोग इस तरह बैठे रहे जैसे उनके सिरों पर पक्षी बैठे हों।" ढाई घंटे लगातार भाषण रहा। "एक प्रोफ़ेसर तो यह भाषण सुनकर रो पड़े और कुछ कम्युनिज़्म के समर्थक विद्यार्थियों ने यह विचार व्यक्त किया कि वे इस्लामी समाजवाद को मानने लगे हैं और अब उसे सही समझते हैं। यूनिवर्सिटी के इकोनॉमिक्स विभाग के एम.ए. के कुछ विद्यार्थियों ने इच्छा जताई कि इस भाषण का अंग्रेज़ी अनुवाद छपवाकर विश्वविद्यालय के इकोनॉमिक्स प्रोफ़ेसरों को भेजा जाए।" उस समय अंग्रेज़ों का शासन था और अधिकतर प्रोफ़ेसर अंग्रेज़ होते थे। "उन्होंने यह भी कहा कि जहाँ भारत के भविष्य के विकास और भलाई के लिए अलग-अलग योजनाएँ पेश हो रही हैं, वहाँ यह इस्लामी व्यवस्था, जिसे हुज़ूर ने पेश किया है, मुसलमानों के विचारों का प्रतिनिधित्व करेगी।"

(अनवारुल उलूम, जिल्द 18, परिचय पुस्तक "इस्लाम का आर्थिक सिस्टम", पृष्ठ 3–2)

इस भाषण की अध्यक्षता मिस्टर रामचंद मचंदा साहब, एडवोकेट हाईकोर्ट लाहौर ने की। लिखने वाले बताते हैं कि इस प्रभावशाली भाषण के बाद सभा के अध्यक्ष लाला रामचंद मचंदा साहब ने संक्षिप्त भाषण किया। वे कहते हैं:

"मैं अपने गैर-मुस्लिम मित्रों से कहूँगा कि ऐसे इस्लाम का सम्मान करने में आपको क्या आपत्ति हो सकती है? आपने जिस गंभीरता और शांति से ढाई घंटे तक हुज़ूर का भाषण सुना है, अगर कोई यूरोपीय यह दृश्य देखता तो हैरान होता कि भारत ने कितनी प्रगति कर ली है।"

वेम्बली धार्मिक सम्मेलन

इस सम्मेलन में इस्लाम की श्रेष्ठता और सत्यता के बारे में हुज़ूर ने जो ऐतिहासिक लेख तैयार किया, वह "Ahmadiyyat or the True Islam" (अहमदियत अर्थात सच्चा इस्लाम) के नाम से विश्वभर में प्रसिद्ध है। इस लेख में इस्लाम की मूल शिक्षाएँ, उनकी बुद्धिमत्ता और दर्शन अत्यंत आकर्षक और तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं। विषय की विस्तारपूर्ण प्रकृति के कारण यह लेख इतना लंबा हो गया कि सम्मेलन के निर्धारित समय में पढ़ा जाना संभव न था। इसलिए हुज़ूर ने एक संक्षिप्त लेख तैयार किया, जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद "Ahmadiyya Movement" के नाम से प्रकाशित हुआ, जिसे उस सभा में हुज़ूर के निर्देश पर चौधरी सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ा। हुज़ूर अपने सभी साथियों सहित उस सभा में मौजूद थे। यहाँ यह उल्लेख भी रोचक है कि जब हज़रत चौधरी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लेख पढ़ने के लिए उठे तो हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके कान में कहा, "घबराना नहीं, मैं दुआ करूँगा।" अंग्रेज़ी भाषा पर पूर्ण अधिकार रखने वाले अनुभवी वक्ता हज़रत चौधरी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए ये शब्द और अधिक ख़ुदा तआला का सहायता और विश्वास का कारण बने, और यह भाषण सभी श्रोताओं ने पूरे ध्यान से सुना। लेख समाप्त होने पर सभा के अध्यक्ष मिस्टर थियोडोर मॉरिसन ने अपनी टिप्पणी में कहा:

"मुझे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। लेख की उत्कृष्टता और सुंदरता का अंदाज़ा स्वयं लेख ने करा दिया है। मैं केवल अपनी ओर से और सभा के उपस्थित लोगों की ओर से लेख की उत्तम व्यवस्था, उच्च विचार और श्रेष्ठ तर्क-पद्धति के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह का धन्यवाद करता हूँ। उपस्थित लोगों के चेहरे मेरी राय से सहमत दिखाई देते हैं, और मुझे विश्वास है कि मैं उनकी ओर से धन्यवाद अदा करने में सही हूँ और उनकी प्रतिनिधि आवाज़ हूँ।"

(अलफ़ज़्ल, 18 नवंबर 1924)

एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान, जो धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन में बहुत निपुण थे, यह लेख सुनकर अनायास कह उठे:

"Well put, well arranged, well dealt."

अर्थात बहुत अच्छी तरह बयान किया गया, बहुत अच्छी तरह क्रमबद्ध किया गया और बहुत अच्छी तरह प्रस्तुत किया गया। अक्सर उपस्थित लोगों की ज़ुबान पर यह वाक्य था:

"Rare addresses, one cannot hear such addresses every day."

अर्थात एक अनोखा भाषण ऐसे दुर्लभ विषय हर रोज़ सुनने को नहीं मिलते।

हुज़ूर की "सुल्तानुल बयानी" का यह प्रभाव था कि आपकी आकर्षक तकरीरें सुनकर अहमदियत से पूर्वाग्रह रखने वाले लोग भी प्रेम के सागर में डूबने पर मजबूर हो जाते थे।

श्रीमान मौलाना अब्दुल बासित शाहिद साहब बयान करते हैं:

"एक गैर-जमाअत विद्वान क़ादियान जाकर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हुका भाषण सुनने के बाद लिखता है: सारा जनसमूह उस पवित्र आत्मा की एक

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

छोटी उंगली के इशारे पर चल रहा है। हर व्यक्ति झुका हुआ और अपने इमाम के प्रेम में रंगा हुआ दिखाई देता है। यह व्यक्ति लेखनी का उस्ताद भी है, भाषण-कला का उच्च दर्जे का विशेषज्ञ भी और संगठन का उच्च स्तर का संचालक भी।"

(रोज़नामा "अलफ़ज़्ल" रब्वा, 17 फ़रवरी 2011)

आपका पवित्र अस्तित्व केवल एक भविष्यवाणी की पूर्ति नहीं था, बल्कि यह घोषणा भी था कि ख़ुदा आज भी अपने बंदों से बात करता है और अपने दीन की रक्षा के लिए ऐसे व्यक्तित्व पैदा करता है जो "प्रकट और गुप्त ज्ञान से परिपूर्ण" होते हैं। यह दया का चिन्ह क़यामत तक हर उस प्यासे मन के लिए संतोष का कारण रहेगा, जो ख़ुदा के अस्तित्व और सच्चे दीन की तलाश में भटक रहा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हुने फ़रमाया था:

एक वक्त आएगा कहेंगे तमाम लोग
मिल्लत के इस फिदाई पर रहमत ख़ुदा करे

इस महान भविष्यवाणी के आस्था बढ़ाने वाले प्रकट रूप को देखकर और इसकी निरंतर तथा विश्वव्यापी प्रभावशीलता को अपनी आँखों से देखने के बाद आज, अल्हम्दुलिल्लाह, हम पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का पवित्र व्यक्तित्व केवल एक व्यक्ति का नाम नहीं था, बल्कि वह एकमात्र ख़ुदा की उस पूर्ण शक्ति का प्रकट रूप था, जिसने इस्लाम के पुनर्जागरण के लिए दिव्य सहायता का वादा किया था। आपके पवित्र अस्तित्व ने दुनिया के कोनों तक तौहीद का झंडा ऊँचा करके यह साबित कर दिया कि मुहम्मदी मसीह का यह वीर सेनानी वास्तव में वही "मुबारक पुत्र" था, जिसने अपने पालनहार से प्रेम का ऐसा संबंध निभाया कि धरती और आकाश की गवाहियाँ उसके समर्थन में पुकार उठीं कि:

अब समय आ गया है कि सत्य को पहचानने वाले कहें
मिल्लत के इस फिदाई पर रहमत ख़ुदा करे
ऐ फ़ज़्ल-ए-उमर, तेरे औसाफ़ करीमान
बतला ही नहीं सकता मेरा फिक्र सुखन-दाना

★ ★ ★

शेष पृष्ठ 24 का

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हमें हमारी ज़िम्मेदारियों की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं:

"अब हमारा भी काम है कि अपने दायरे में मुसलह (सुधार करने वाले) बनने की कोशिश करें। अपने ज्ञान से, अपनी बातों से और अपने आचरण से इस्लाम का सुंदर संदेश हर ओर फैलाएँ। अपने सुधार की ओर भी ध्यान दें, अपनी संतान के सुधार की ओर भी ध्यान दें और समाज के सुधार की ओर भी ध्यान दें। और इस सुधार और संदेश को दुनिया में स्थापित करने के लिए पूरी कोशिश करें, जिसका स्रोत ख़ुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बनाया था। यदि हम इस सोच के साथ अपनी ज़िंदगियाँ बिताएँगे तो यौम-ए-मुसलह मौऊद का हक़ अदा करने वाले होंगे।"

(ख़ुत्बात मसरूर, जिल्द 9, पृष्ठ 92–91)

मोहतरमा साहिबज़ादी अमतुल कुद्दूस बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी कविता में बहुत सुंदर कहा है:

खुदा ने खुद उसे 'फ़ज़्ल-ए-उमर' कहकर पुकारा था,
उमर सा दबदबा वैसी ही शौकत उसको हासिल थी
वह नूर आसमानी था ज़मीं पर जो उतर आया
कलिमतुल्लाह होने की सआदत उसको हासिल थी
वजीह व पाक लड़के की ख़ुदा ने खुद खबर दी थी
अजब रंग-ए-ज़का, शान-ए-वजाहत उसको हासिल थी
वह ज़ेहन व फ़हम की जिसके ख़ुदा ने खुद गवाही दी
ज़ेहानत उसको हासिल थी, फ़िरासत उसको हासिल थी

(काव्य: मोहतरमा साहिबज़ादी अमतुल कुद्दूस बेगम साहिबा)

दुआ है कि ख़ुदा तआला हम सबको हज़रत मुसलह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की अपेक्षाओं के अनुसार इस्लाम और अहमदियत की शिक्षाओं पर अमल करने और उन्हें पूरी दुनिया में फैलाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन।

★ ★ ★

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमात की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्यात्म्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पवित्र जीवन और प्रमुख कार्यों पर एक संक्षिप्त दृष्टि

(हाफ़िज़ सैयद रसूल नियाज़, मुरब्बी सिलसिला, नज़ारत नशर व इशाअत क़ादियान)

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हुका बरकत वाला अस्तित्व अनेक भविष्यवाणियों का समुच्चय था। उनके अनुसार आप रज़ियल्लाहु अन्हु 25 वर्ष की आयु में ख़लीफ़तुल मसीह चुने गए और फिर 52 वर्ष तक इस महान ज़िम्मेदारी को निभाते रहे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने 20 फ़रवरी 1886 को एक पवित्र स्वभाव वाले पुत्र के जन्म की ख़बर दी, जो दिल का कोमल होगा और बाहरी व आंतरिक ज्ञान से भर दिया जाएगा, तथा बताया गया कि वह नौ वर्षों की अवधि में अवश्य पैदा होगा। इस भविष्यवाणी के अनुसार सैय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब, हज़रत अम्मां जान नुसरत जहाँ बेगम के गर्भ से 12 जनवरी 1889, शनिवार के दिन पैदा हुए। इल्हाम में आपका नाम महमूद, बशीर सानी और फ़ज़्ल-ए-उमर भी रखा गया तथा "कलिमतुल्लाह" और "फ़ख्र-ए-रुसुल" के ख़िताबों से सम्मानित किया गया। चूँकि आपके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बहुत सी ख़ुशख़बरियाँ मिली थीं, इसलिए हुज़ूर आपका बहुत ध्यान रखते थे। कभी आपको डाँटा नहीं। बचपन से ही आपके स्वभाव में दीन की ओर झुकाव था। दुआ में रुचि थी और नमाज़ें बहुत ध्यान से अदा करते थे।

आपने प्रारंभिक शिक्षा मदरसा तालीमुल इस्लाम में प्राप्त की। स्वास्थ्य की कमजोरी और नज़र की खराबी के कारण आपकी पढ़ाई की स्थिति अच्छी न रही और आप हर कक्षा में रियायती तौर पर आगे बढ़ते रहे। मिडिल और एंट्रेंस (मैट्रिक) के सरकारी इम्तिहानों में असफल हुए, इस तरह दुनियावी शिक्षा समाप्त हो गई। अल्लाह तआला ने भविष्यवाणी के अनुसार स्वयं आपको बाहरी और आंतरिक शिक्षा दी, जिसे दुनिया ने देखा। औपचारिक शिक्षा के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने आपको अपनी विशेष तरबियत में लिया। क़ुरआन करीम का अनुवाद तीन महीने में पढ़ा दिया। फिर बुख़ारी भी तीन महीने में पढ़ाई। कुछ तिब्ब (चिकित्सा) भी पढ़ाई और कुछ अरबी की किताबें पढ़ाईं। क़ुरआनी ज्ञान का खुलना तो दैवी अनुग्रह होता है, पर यह सत्य है कि क़ुरआन करीम का गहरा लगाव हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वलरज़ियल्लाहु अन्हा ने ही पैदा किया। जब आपकी उम्र 18–17 वर्ष थी, एक दिन सपने में एक फ़रिश्ता प्रकट हुआ और उसने सूरह फ़ातिहा की तफ़सीर सिखाई। उसके बाद से क़ुरआन की तफ़सीर का ज्ञान अल्लाह तआला स्वयं देता चला गया।

1906 में जब आपकी उम्र 17 वर्ष थी, सदर अंजुमन अहमदिया की स्थापना हुई तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आपको मजलिस-ए-मुअतमिदीन का सदस्य नियुक्त किया। सैय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के प्रारंभिक जीवन के अध्ययन से ही स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह तआला ने आपको दीन की सेवा का जोश, रुचि और उत्साह प्रदान किया था और आप दृढ़ निश्चय के साथ मसीह-ए-ज़मां के मिशन के सिपाही बन गए थे।

26 मई 1908 को जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का देहावसान हुआ, उस समय आपकी आयु केवल 19 वर्ष थी। अपने प्यारे इमाम की जुदाई का दुख पहाड़ बनकर टूटा। लेकिन आपने इस बड़े सदमे में भी अपने आप को संभाला और शोक में डूबकर बैठने के बजाय संभावित विरोध का सामना करने के लिए अपने आप को तैयार किया। आप स्वयं फ़रमाते हैं:

"मैंने वहीं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सिरहाने खड़े होकर कहा कि ऐ ख़ुदा! मैं तुझे हाज़िर-नाज़िर जानकर सच्चे दिल से यह वादा करता हूँ कि अगर सारी जमाअत भी फिर जाए, तब भी वह पैग़ाम जो तूने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से उतारा है, मैं उसे दुनिया के कोने-कोने में फैलाऊँगा... मेरे शरीर का हर कण इस वादे में शामिल था..."

(ख़ुत्बा जुमआ, फ़रमूदा 18 फ़रवरी 1944, ख़ुत्बात-ए-महमूद, जिल्द 25, पृष्ठ 134)

लोग भावनाओं में बहकर वादे तो कर लेते हैं, पर निभा नहीं पाते। लेकिन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का जीवन इस बात का प्रमाण है कि आपने अंतिम सांस तक अपने वादे को दृढ़ संकल्प के साथ निभाया।

16–15 वर्ष की आयु में आपको यह इल्हाम हुआ: "इन्नल्लज़ीना त्तबऊका फ़ौक़ल्लज़ीना कफ़रू इला यौमिल क़ियामह" इसमें संकेत था कि आप एक दिन जमाअत के इमाम होंगे। क़ुरआन की समझ आपको दैवी उपहार के रूप में मिली थी। लेकिन ख़िलाफ़त के इन्कार करने वाले लोग आपके विरुद्ध योजनाएँ बनाते रहे। उन्हें आपसे शत्रुता थी क्योंकि आप हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के आज्ञाकारी, सहायक और मज़बूत समर्थक थे, और आपकी धार्मिकता व लोकप्रियता बढ़ रही थी।

ख़िलाफ़त-ए-ऊला के दौर में आपने भारत के विभिन्न क्षेत्रों तथा अरब और मिस्र का दौरा किया। हज की सआदत पाई। 1911 में आपने मजलिस अंसारुल्लाह क़ायम की और 1913 में अख़बार "अलफ़ज़्ल" जारी किया, जिसकी संपादन सेवा आपने अपने ख़िलाफ़त काल तक उत्कृष्ट रूप से निभाई।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की बीमारी के दिनों में आप दिन-रात उनकी सेवा में रहते। उनके देहावसान के बाद 14 मार्च 1914 को मस्जिद नूर में ख़िलाफ़त-ए-सानिया का चुनाव हुआ। लगभग ढाई हज़ार लोगों ने बैअत की, जबकि लगभग पचास लोगों ने इंकार कर दिया और अलग राह अपनाई। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु इस स्थिति का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं:

"मुझे बैअत के शब्द याद न थे... मौलवी सरवर शाह साहिब ने कहा, मैं शब्द दोहराता जाऊँगा, आप बैअत ले लें। तब मैंने समझा कि ख़ुदा की यही इच्छा है..."

(आईना-ए-सदाक़त, पृष्ठ 191–190)

आपको जमाअत के सदस्यों से असाधारण प्रेम था। यह सच्चाई है कि जमाअत के लोग आपको अपनी पत्नियों, अपने बच्चों और अपने रिश्तेदारों से भी अधिक प्रिय थे। उनकी ख़ुशी से आपको ख़ुशी मिलती थी और उनके दुःख से आप गहरे दुःख में पड़ जाते थे। जब आप ख़लीफ़ा चुने गए तो उसी वर्ष जलसा सालाना में भाषण करते हुए आपने फ़रमाया:

"क्या तुम में और उन लोगों में, जिन्होंने ख़िलाफ़त से मुँह मोड़ लिया है, कोई अंतर है? एक बहुत बड़ा अंतर यह है कि तुम्हारे लिए एक ऐसा व्यक्ति मौजूद है जो तुम्हारा दर्द रखने वाला है, तुमसे प्रेम करने वाला है, तुम्हारे दुःख को अपना दुःख समझने वाला है, तुम्हारी तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ जानने वाला है, तुम्हारे लिए ख़ुदा तआला के सामने दुआएँ करने वाला है। मगर उनके लिए ऐसा कोई नहीं। तुम्हारी उसे फ़िक्र है, दर्द है, और वह तुम्हारे लिए अपने मौला के सामने तड़पता रहता है, लेकिन उनके लिए ऐसा कोई नहीं है। किसी व्यक्ति का एक ही बीमार हो तो उसे चैन नहीं आता, लेकिन तुम उस व्यक्ति की हालत का अंदाज़ा कर सकते हो जिसके हज़ारों नहीं बल्कि लाखों बीमार हों।"

(बरकात-ए-ख़िलाफ़त, अनवारुल उलूम, जिल्द 2, पृष्ठ 156)

17 मार्च 1914 को हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद अक्सा क़ादियान में दर्सुल क़ुरआन का आरंभ किया। 20 मार्च 1914 को दौर-ए-ख़िलाफ़त का पहला ख़ुत्बा जुम्आ दिया। 10 अप्रैल 1914 को ख़िलाफ़त-ए-सानिया में सदर अंजुमन अहमदिया की पहली बैठक आपकी अध्यक्षता में हुई। 12 अप्रैल को "मनसब-ए-ख़िलाफ़त" विषय पर आपने भाषण दिया। जून माह में निज़ाम दकन को तब्लीग़ के लिए "तौहफ़तुल मुलूक" पुस्तक लिखी। मार्च 1915 में सीलोन और जून में मॉरीशस में जमाअत अहमदिया का मिशन क़ायम हुआ। उसी वर्ष मशहूर, सच्चे और ख़िदमत करने वाले हज़रत सेठ अब्दुल्ला अलाह दीन साहिब सिकंदराबाद दकन ने जमाअत में शामिल होने की सआदत पाई। मार्च 1916 में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बड़े भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर साहिब की पत्नी हुरमत बीबी (ताई साहिबा) ने बैअत करके सिलसिला अहमदिया में प्रवेश किया, जिससे "ताई आई" वाली इल्हाम की भविष्यवाणी पूरी हुई।

24 फ़रवरी 1917 को हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब के ख़त्म-ए-क़ुरआन पर आमीन की रस्म हुई। उसी वर्ष 21 जून को आपने क़ादियान में नूर अस्पताल की नींव रखी। 1 जनवरी 1919 को आपने अंजुमन अहमदिया में नज़ारतों का नियम क़ायम किया। 26 फ़रवरी 1919 को हबीबा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 10 Thursday 05-12 February 2026 Issue No. 6-7

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

हॉल लाहौर में "इस्लाम में मतभेदों की शुरुआत" विषय पर महान व्याख्यान दिया। उसी वर्ष जून में क़ादियान में अनाथालय स्थापित हुआ।

15 फ़रवरी 1920 को हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु अमरीका में मिशन क़ायम करने के लिए फ़िलाडेल्फ़िया बंदरगाह पर उतरे, मगर उन्हें शहर में जाने से रोक दिया गया। बाद में मई में अमरीका में प्रवेश और तब्लीग़ की अनुमति मिल गई। 7 जून 1920 को आपने मस्जिद अहमदिया लंदन के लिए चंदे की तहरीक की, और ज़मीन ख़रीदने पर 9 सितंबर को क़ादियान में ख़ुशी की तक़रीब हुई।

22 अगस्त 1921 को आप कश्मीर में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र पर दुआ के लिए गए। 16–15 अप्रैल 1922 को जमाअत अहमदिया की पहली स्थायी मजलिस-ए-शूरा हुई। 12 जुलाई 1924 को आप अपने पहले यूरोप सफ़र पर क़ादियान से रवाना हुए। 17 अगस्त को इटली के प्रधानमंत्री मुसोलिनी से मुलाक़ात की। 22 अगस्त को पहली बार लंदन पहुँचे। 9 सितंबर को "ईस्ट एंड वेस्ट यूनियन" के जलसे में पहला अंग्रेज़ी भाषण दिया। 23 सितंबर को वेंबली कॉन्फ्रेंस में आपका लेख "अहमदियत यानी सच्चा इस्लाम" हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़कर सुनाया। 19 अक्तूबर को मस्जिद फ़ज़्ल लंदन की नींव रखी, और 24 नवंबर को यूरोप सफ़र से वापसी हुई।

जनवरी 1926 में क़ादियान में तारघर के उद्घाटन पर पहला तार हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भारत की मशहूर जमाअतों को भेजा। 3 अक्तूबर को सर शेख़ अब्दुल क़ादिर साहिब ने मस्जिद फ़ज़्ल लंदन का उद्घाटन किया। उसी वर्ष पहली बार अहमदी महिलाओं के जलसा सालाना की शुरुआत हुई। 20 मई 1928 को आपने जामिआ अहमदिया का उद्घाटन किया। 17 जून को आपकी तहरीक पर पूरे भारत में पहला महान "यौम-ए-सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम" मनाया गया। 19 दिसंबर को पहली बार रेलगाड़ी क़ादियान पहुँची, जिसमें सफ़र करते हुए हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु अमृतसर से क़ादियान आए।

दिसंबर 1930 में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब, पुत्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, अहमदियत में शामिल हुए। 25 जुलाई 1931 को आप "ऑल इंडिया कश्मीर कमेटी" के अध्यक्ष चुने गए। 1 जनवरी 1933 को आपने पहली बार हवाई जहाज़ से सफ़र किया।

23 नवंबर 1934 को आपने तहरीक-ए-जदीद की घोषणा की। 2 मार्च को क़ादियान में दारुल सनअत का उद्घाटन किया। 14 दिसंबर 1936 को क़ादियान में टेलीफ़ोन के उद्घाटन पर आपने चौधरी सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु से बात की। 7 जनवरी 1938 को पहली बार मस्जिद अक्सा में लाउडस्पीकर से ख़ुत्बा जुम्आ दिया। 1 अक्तूबर 1938 को एक रूहानी स्वप्न के आधार पर आपका सफ़र हैदराबाद दकन शुरू हुआ, जिस पर बाद में "सैर-ए-रूहानी" शीर्षक से भाषण दिए।

3 दिसंबर 1939 को दुनिया भर में पहला "यौम-ए-पेशवायान-ए-मज़ाहिब" मनाया गया। 28 दिसंबर 1939 को ख़िलाफ़त के 25 वर्ष पूरे होने पर जुबली मनाई गई। इस अवसर पर पहली बार लिवा-ए-अहमदियत, फिर लिवा-ए-ख़ुद्दामुल अहमदिया और महिलाओं के जलसे में लजना इमाइल्लाह का झंडा लहराया गया।

26 जनवरी 1940 को आपकी बनाई हुई हिजरी शम्सी तारीख़ पहली बार अल-फ़ज़्ल में छपी और बाद में जमाअत में प्रचलित हुई। 1943 में आपने इफ़्ता कमेटी बनाई। 28 जनवरी 1944 को आपने ख़ुदा तआला के आदेश से पहली बार मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी का मिसदाक होने का दावा किया, और 29 जनवरी को पहली बार यौम-ए-मुस्लेह मौऊद मनाया गया। 4 जून 1944 को तालीमुल इस्लाम कॉलेज क़ादियान का उद्घाटन किया। 28–26 दिसंबर 1946 को संयुक्त भारत का आख़िरी जलसा सालाना हुआ, जिसमें 39,700 लोग शामिल हुए।

31 अगस्त 1947 को आप क़ादियान से पाकिस्तान हिजरत करके लाहौर पहुँचे। 5 अगस्त 1948 को सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान ने रब्वा की ज़मीन हासिल की, और 20 सितंबर को रब्वा का उद्घाटन हुआ। 17–15 अप्रैल 1949 को रब्वा में पहला जलसा सालाना हुआ। 31 मई 1950 को आपने कई केंद्रीय इमारतों की नींव रखी। 21 मई 1951 को रब्वा में टेलीफ़ोन शुरू हुआ, पहला फ़ोन अमीर जमाअत अहमदिया क़ादियान को किया गया।

10 मार्च 1954 को मस्जिद मुबारक रब्वा में असर की नमाज़ के बाद एक व्यक्ति अब्दुल हमीद ने आप पर जानलेवा हमला किया। 7 अक्तूबर 1954 को चौधरी सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब अंतरराष्ट्रीय अदालत के अध्यक्ष चुने गए। 29 अप्रैल 1955 को आप दूसरे यूरोप सफ़र पर कराची से रवाना हुए और 28 सितंबर को वापसी हुई। 7 जुलाई 1957 को जामिअतुल मुबश्शिरीन को जामिआ अहमदिया में मिला दिया गया। दिसंबर 1957 में आपने वक़्फ़-ए-जदीद की तहरीक की घोषणा की। 1964 में आपकी ख़िलाफ़त के 50 साल पूरे होने पर दुनिया भर के अहमदियों ने शुक्राने की दुआएँ कीं और बैअत की ताज़ा पुष्टि की।

8–7 नवंबर 1965 की रात लगभग 2 बजे, 77 वर्ष की आयु में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने असली मौला से जा मिले। वकाना अम्रम मक़ज़िया।

आपकी वफ़ात की खबर मिलते ही दुर-दूर से हज़ारों अहमदी रब्वा आने लगे। अगले दिन जमाअत ने मिलकर नए इमाम का चुनाव किया और हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब रहमहुल्लाह को ख़लीफ़ा चुना और बैअत की। 9 नवंबर की शाम आपका जनाज़ा बहिश्ती मक़बरा ले जाया गया, जहाँ हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहुत से अहमदियों के साथ नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। आपकी क़ब्र आपकी वालिदा हज़रत सैयदा नुसरत जहाँ बेगम साहिबा के पास बनाई गई।

ख़्वाजा हसन निज़ामी साहिब कहते हैं:

"अक्सर बीमार रहते हैं, मगर बीमारियाँ उनकी काम करने की फुर्ती में रुकावट नहीं डाल सकीं। उन्होंने विरोध की आँधियों में सुकून के साथ काम करके अपनी बहादुरी साबित कर दी और यह भी कि मुग़ल नस्ल में काम करने का ख़ास सलीक़ा होता है। राजनीतिक समझ भी रखते हैं और धार्मिक बुद्धि व समझ में भी मज़बूत हैं, और लड़ाई का हुनर भी जानते हैं, यानी दिमाग़ी और क़लमी जंग के माहिर हैं।"

(अख़बार आदिल, दिल्ली, 24 अप्रैल 1933, हवाला: बद्र, 6 फ़रवरी 2002)

हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भविष्यवाणी के अनुसार महान ज्ञान से भरे कार्य करते हुए असंख्य भाषण और व्याख्यान दिए और बहुत-सी पुस्तकें लिखीं। इनमें तफ़सीर-ए-कबीर, तफ़सीर-ए-सगीर और पुस्तकों का संग्रह अनवारुल उलूम शामिल हैं। जमाअत की तरबियत (प्रशिक्षण) और जमाअती उद्देश्यों को उच्च स्तर पर पूरा करने के लिए आपने पाँच सहायक संगठनों की स्थापना की: लजना इमाइल्लाह, नासरातुल अहमदिया, मजलिस अंसारुल्लाह, मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया और अत्फ़ालुल अहमदिया।

आपकी पत्नियों का विवरण इस प्रकार है:

(1) हज़रत सैय्यदा महमूदा बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा
(2) हज़रत सैय्यदा अमतुल हई बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा
(3) हज़रत सैय्यदा मरयम बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा
(4) हज़रत सैय्यदा सारा बेगम साहिबा
(5) हज़रत सैय्यदा अज़ीज़ा बेगम साहिबा
(6) हज़रत सैय्यदा मरयम सिद्दीक़ा साहिबा
(7) हज़रत सैय्यदा बुशरा बेगम साहिबा

शेष पृष्ठ 22 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad